अंक : जनवरी-मार्च, 2022

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भाषा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

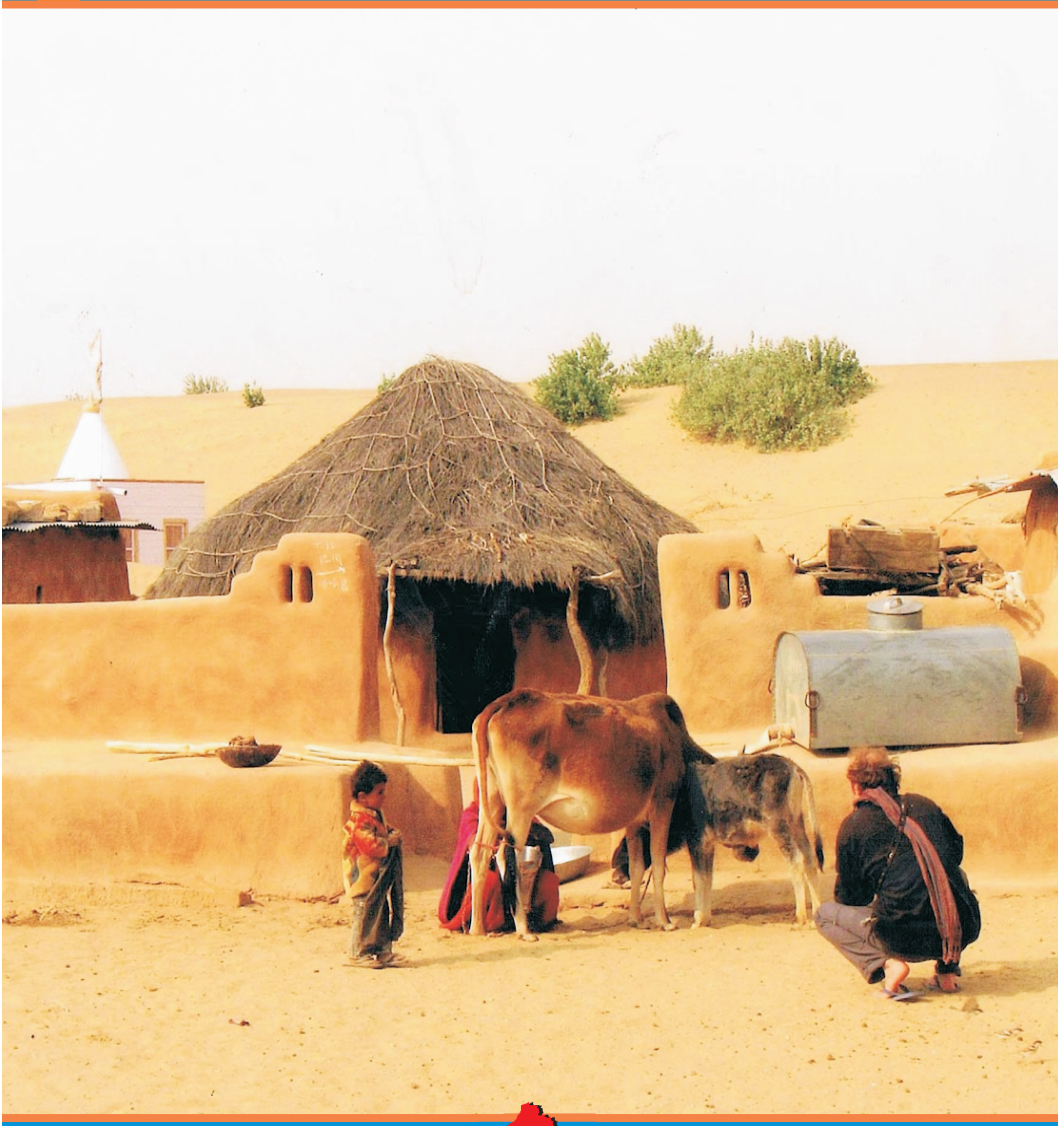

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जनवरी-मार्च, 2022

बरस : 45 अंक : 2 पूर्णांक : 154

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com

आवरण
ज्योत्स्ना राजपुरोहित, बीकानेर

रेखाचित्राम
प्रवेश सोनी, कोटा

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

भासा सारू आंचळिक मोह छोडण री दरकार — *श्याम महर्षि* — 3

कविता

आपणा बडेरा / थोड़ो नैड़ो आकर देख — *श्रीनिवास तिवाड़ी* — 4

देखतां-देखतां गमग्यो गांम! — *गिरधरदान रतनू दासोड़ी* — 7

म्हां लुगायां : सात कवितावां — *ओम नागर* — 9

चकवो-चकवी अर पीपळ — *श्यामसिंह राजगुरु* — 11

गीत

ओळ्यूं / उडीक / खोड़िलाई रो देव — *न्यायाधिपति गोपाल कृष्ण व्यास* — 13

गांव — *छगनराज राव 'दीप'* — 15

गजल

दोय गजलां — *विनोद सोमानी 'हंस'* — 17

कहाणी

जोग-संजोग री बातां — *डॉ. कृष्णा आचार्य* — 18

लघुकथा

नदी रो घमंड — *ज्योति राजपुरोहित* — 21

व्यंग्य

नींद उडगी — *बसंती पंवार* — 22

खास लेख

आज री राजस्थानी भासा रो कुरब-कायदो — *डॉ. मदन सैनी* — 24

शोधलेख

पांडुलिपियां रा खजाना : राजस्थान रा पोथीखाना — *शंकरसिंह राजपुरोहित* — 39

कूंत

टाबरां में जीव-दया जगावती—'खोल पंखेरू पांख' — *सी.अेल. सांखला* — 47

संपादकीय

भासा सारू आंचळिक मोह छोडण री दरकार

राजस्थानी भासा भारत ई नीं, संसार री सिमरध भासावां मांय सूं अेक है। इणरै कनै आपरो विग्यान-सम्मत व्याकरण, नौ खंडां रो लूंठो सबदकोस, देवनागरी लिपि रै सागै इणनै बोलण अर समझण वाळां री बडी जनसंख्या है, जकी लगैटगै 14 करोड़ रै आसै-पासै है। आठवैं सईकै सूं उजास में आई राजस्थानी भासा रो लूंठो साहित्य है, जिणमें प्राचीन अर मध्यकालीन पांडुलिपियां इणरी धरोड़ है, तो आधुनिक साहित्य ई भारतीय साहित्य रै सैंजोड़ ऊभो है। आज साहित्य री हरेक विधा में राजस्थानी में लगोलग सिरजण होय रैयो है।

भारत री हरेक प्रांतीय भासा दांई राजस्थानी भासा री ई केई बोलियां है, जिणां में मारवाड़ी, हाड़ौती, ढूंढाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती, वागड़ी, मालवी आद खास है। जकी भासा री जित्ती बेसी बोलियां हुवै, वा भासा बित्ती ई सिमरध हुवै। भासा रो साहित्यिक स्वरूप अर मानकीकरण भी आं बोलियां सूं ईज तै हुवै। कोई भी भासा रै सबदां रै बरतारै मांय इण बात रो ध्यान राखीजै कै आपां जकी साहित्यिक भासा बरत रैया हां, वा आखै राजस्थान रा पाठकां रै समझ में आवणी चाईजै, अैड़ो नीं हुवै कै वा किणी अंचळ विसेस रा पाठकां तांई सीमित होयनै रैय जावै। इण सारू जका सबद बेसी चलत में हुवै, बांनै ई बरतणा भासा री सिमरधता सारू जरूरी है। इण अंक में खास लेख रै रूप में भासाविद् डॉ. मदन सैनी रो आलेख दिरीज रैयो है, जिण माथै पाठकां सागै राजस्थानी रै हरेक लेखक नै ई ध्यान देवण री दरकार है।

दाखलै सरूप उणां आपरै आलेख में बतायो है कै राजस्थानी में संबंधबोधक विभक्ति 'रा, रै, री' बरती जावै, जदकै हिंदी में 'का, के, की' तो पंजाबी में 'दा दे दी'। इणी भांत मराठी में 'चा, चे, ची', गुजराती में 'ना, ने, नी' अर सिंधी में 'जा, जे, जी'। 'ढोला-मारू रा दूहा' नै जे आपां 'ढोला-मारू का दूहा' लिखसां तो पछै हिंदी अर राजस्थानी में फरक ई कांई रैय जासी। इयां ई 'मीरां री वाणी' अर 'मीरां की वाणी' है। इण वास्तै राजस्थानी में 'रा, रै, री' री ई विभक्ति बरतीजणी चाईजै। इणी भांत 'कहाणी' नै कठैई काणी, क्याणी, खाणी, ख्याणी भी बोल्यो जावै, पण लिखती बगत तो कहाणी ई लिखणो चाईजै। मारवाड़ी बोली में 'स' री ठौड़ 'ह' बोलीजै—हफाखानो (सफाखानो), हाबुदाणो (साबुदाणो) पण लिखती बगत तो सफाखानो अर साबुदाणो ई लिखणो चाईजै। इणी तरै लेखक लिखती बगत आपरी आंचळिक बोली रो मोह छोडनै बेसी प्रचलित सबदां रो बरतारो करसी तो बांरो लिख्योड़ो आखै राजस्थान रो हरेक पाठक समझ सकैला।

-श्याम महर्षि

श्रीनिवास तिवाड़ी

आपणां बडेरा

दीखणं में गिंवार हा, लाखां रो बिजनस कर लेंता!
ब्याजूणां दाम दियां पैली, अडाणै गैणां धर लेंता!

च्यार महीना खपता हा, बारा महीनां खांता हा!
ब्याव सगाई आणां टाणां, पूरो गांव जिमांता हा!

अेक लोटो हूंतो हो, सगळा घर रा निपट्यांता हा!
दांतणं खातर नीम बंवळ री, डाळी तोड़ लियांता हा!

धोती लोटो लेकर जांता, धन री पोटां ले आंता हा!
ढाका री मलमल ल्यांता हा, लाहोरी लोटा ल्यांता हा!

होकां रा हबीड़ उठता, चिलम भरयोड़ी राखता!
गाय भैंस रा धीणां हा, बळदां री जोड़ी राखता

परणीजणं नें जांवता हा, ऊंट बळद रा गाड़ा में!
हनीमून मनाय लेंवता, भैंसियां रा बाड़ा में!

न्यारा-न्यारा रूम कठै हा, कामळां रा ओटा हा!
पोता-पोती पसता-पसता, दादी भेळा सोंता हा!

सात भायां री बैनां हूंती, दस बेटां रा बाप हूंता!
भूखो कोई रेंवतो कोनी, मोटा अपणै आप हूंता!

स्वांगिया माता देवळ, गांव-झीपासनी, पोस्ट-करवड़ (जोधपुर) 342037 मो. 9214111746

 ISSN : 2320-0995

मां बापां रै सामनै, फिल्मी गाणां गांता कोनी!
घरलाळी री छोडो खुद रा, टाबर नैं बतळांता कोनी!

कारड देख राजी हूंता, तार देखकर धूजता!
मांदगी रा समाचार, मरयां पछै ही पूगता!

मारवाड़ी मे लिखता लेणां, आडी टेढी खांचता!
लुगायां रा लव लेटर नै, डाकिया ही बांचता!

च्यार-पांच सोगरा तो, धाप्योड़ा गिट ज्यांवता!
खेजड़ी रा छोडा खार, काळ सूं भिड़ ज्यांवता!

लुगायां घर में ही रैंती, मोड़ा पर कोनी बैठती!
साठ साल री हू ज्यांती, बजार कोनी देखती!

बाड़ा भरयोड़ा टाबर हा, कोठा भरिया धान हा!
पैदा तो इंसान करता, पाळता भगवान हा!

कोडियां री कीमत हूंती, अंटी में कळदार रैंता!
लुगायां री पेटियां में, गैणां रा भंडार रैंता!

भाखरां पर मोटा म्हैल, माळिया चिणायग्या!
आदमी में ताकत कित्ती, आपां नैं समझायग्या!

पाळा जांता माळवै, डांग ऊपर डेरा हा!
तिवाड़ी बै दूजा कोनी, आपणां बडेरा हा!

थोड़ो नैड़ो आकर देख

चांदी हूं चमकाकर देख, तूळी हूं सिलकाकर देख!
दूर खड़्यो कांई देखै है, थोड़ो नैड़ो आकर देख!

कुवा में कांई झांकै है, कित्तो ऊंचो भाखर देख!
पेड़्यां पर कांई पग धोवै, ऊंडी गोत लगाकर देख!

भिखारी नैं दुतकारै है, खुद मांगण नैं जाकर देख!
गरीबां पर कांई हंसै है, आंनै गळै लगाकर देख!

वीर रस रा गीत लिखै है, रणभूमि में जाकर देख!
सूरां रो गुणगान करै है, खुद रो सीस कटाकर देख!

लोगां नैं कांई समझावै, खुद नै भी समझाकर देख!
इत्तो बेगो क्यूं उफणै है, थोड़ो तो गम खाकर देख!

हद करदी तूं बेसरमी री, थोड़ो तो गम खाकर देख!
पाड़ोसी री पछै बताज्यै, खुद रा घर में झांक'र देख!

तूं खाली सिलगाणी जाणै, सिलग्योड़ी बुझाकर देख!
छुईमुई पर धरै आंगळी, खुद भी तो मुरझाकर देख!

पंडित बणणो चावै है तो, पढकर ढाई आखर देख!
साच देखणो चावै है तो, समसाणां में जाकर देख!

ऊंचो चढणो चावै है तो, पैली ठोकर खाकर देख!
पूरो बाणियो बणणो है तो, पैली घाटो खाकर देख!

गंगा न्हावै जमना न्हावै, हिमाळा पर जाकर देख!
भागीरथ बणकर के कोई, तूं भी गंगा ल्याकर देख!

खाली रीत निभावै मतनां, साची प्रीत लगाकर देख!
म्हारो भेद लेवणो चावै, खुद रो भेद बताकर देख!

टक्का री हांडी लेणै सूं पैली ठोक बजाकर देख!
फक्कड़ बणकर धार फकीरी, मस्ती मार मजाकर देख!

राम मिलण री खातर बंदा, तन में अगन लगाकर देख!
तिवाड़ी घट में मिल ज्यासी, साची लगन लगाकर देख!

◆◆

 ISSN : 2320-0995

गिरधरदान रतनू दासोड़ी

देखतां-देखतां गमग्यो गांम!

नीं चंवरां में जाजम
नीं घेर-घुमेर बड़लो!
नीं मन!
नीं मन री बातां!
करण री कोई ठावी ठौड़
फगत निगै आवै है—
झोड़ ई झोड़!
जिणरो नीं कोई निचोड़!
नीं निचोड़ काढणियो
तो पछै तोड़ कठै है?
जठै नीं मिलै—
किणी री आंख आपस में
उठै पांखविहूणो मन
तूटोड़ै तन में ठिरड़ीजै है
बिनां कमायां
धन जोड़ण री जुगत में
पचै है सगळा बिना विसराम!
देखतां-देखतां गमग्यो गांम।

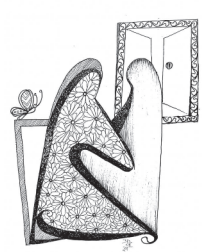

प्राचीन राजस्थानी साहित्य संग्रह संस्थान, दासोड़ी, तहसील-कोलायत, जिला-बीकानेर मो. 9982032642

जठै नीं बाजै अबै
चैन री बंसी
नीं आवै किणी नैं
घोर खांच
सुखरी नींद!
नीं उछरै बाघेलो
नीं बाजै रुणझुणता टोकरिया
छोकरिया तो भूलग्या मस्ती
अर मस्ती में रमणो!
डोकरिया तो नीं जाणै!
कठै हुयग्या गायब?
कठै मोटियार!
अर कठै मोटियार गाळो?
कठै मालो! अनै कठै मल्ल?
अै बातां तो पड़गी है पांतरै!
अबै तो फगत
चर-भर रमणिया
आवै है निगै
जोड़ता दुभरिया अठजाम!
देखतां-देखतां गमग्यो गांम!

नीं कोई दूध री अथाणी!
नीं मथाणी घूमती मही री!
नीं घट्टी! नीं घट्टी वेळा!
नीं परभात, नीं परभाती!
नीं कोई मीठास
नीं कोई मीठी मा!
नीं कोई भाभो नी कोई भाभू!
अबै तो फगत
चैप्योड़ा लागै है गन्ना!
माळीपानां में पळपळाता
साव भाठै रै उनमान।
नीं नेह री निरझणी
नीं अपणास रो इमरत!
नीं दिल में दरद
नीं दरद समझण री समझ!
नीं लड़थड़ै नैं कोई थामै
आगै बध'र हाथ थाम!
देखतां-देखतां गमग्यो गांम।

ज्यूं -ज्यूं बदळ्यो समै
त्यूं-त्यूं इकरंगो गांम
किरड़ै ज्यूं बदळतो गयो!
छोडतो गयो लाज
उतारतो गयो कांचळी सरम री
त्यागतो रैयो धरम मिनखापणै रो!
भरम में भमीज्योड़ो
बोल री कीमत ई विसरग्यो!
सीखग्यो छळ-छदम
कदम-कदम माथै करणी
छागटाई!
कर लीनो धारण
वानो हुसनाकपणै रो!
गळी-गळी गळगळी कर
गिटग्यो गवाड़ ,गोचर
देखतां-देखतां!
नीं छोडी नाडी
नीं निवाण नीं ताडो!
जारग्यो जीवती माखी
बिनां मिचळाण रै
नीं मानी हलाल
अर नीं गिणी हराम!
देखतां-देखतां गमग्यो गांम!
◆◆

ISSN : 2320-0995

ओम नागर

म्हां लुगायां : सात कवितावां

(अेक)

म्हां
लुगायां कै हाथ तो
पीढ्यां सूं
हाल भी
जूत्यां ई छै

बारणो
पटेलजी को होवै
कै ठाकुरजी को।

(दो)

म्हां
लुगायां कै भाग तो
जनमां सूं
हाल भी
दुत्कारां ई छै

मूंडो
सासूजी को होवै
कै सासूजी का जायां को।

मार्फत साहित्य अकादेमी, 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर (ईस्ट) मुंबई-400014 मो. 9460677638

(तीन)

म्हां
लुगायां कै पांव तो
सदियां सूं
हाल भी
सांकळ्यां ई छै

घर
बाप को होवै कै बींद को।

(चार)

म्हां
लुगायां की आंख तो
जुगां सूं
हाल भी
आंसू ई छै

बगत
आज को होवै
कै काल्ह को।

(पांच)

म्हां
लुगायां कै कान तो
हमेस सूं
हाल भी
धसैड़ां ई छै

ठौर
पीहर होवै
कै सासरो।

(छह)

म्हां
लुगायां कै डी'ल तो
जाणै कद सूं
हाल भी
लीलां ई छै

लूगड़ी पीळी होवै
कै सतरंगी।

(सात)

म्हां
लुगायां की कूंख तो
जनम सूं
हाल भी
अेकस्यार ई छै

मनख
रागस होवै
कै देवता।

◆◆

ISSN : 2320-0995

श्यामसिंह राजगुरु

चकवो-चकवी अर पीपळ

पीपळ मिनख री पोल खोलै,
साची-साची सबसूं औ बोलै।
साचो है पण कड़वो बोलै,
अंधविश्वास्यां री आंख्यां खोलै।।
मिनख-मिनख नैं चावै कोनी,
अड़ जावै गम खावै कोनी।
डूंगर बळती राखै ना छानी,
पगां बळती दीसै है कोनी।।
बेसरमां नैं सरम नीं आवै,
बैठ सभा में उधम मचावै।
काण-कायदो निजर नीं आवै,
साचां नै पल में धमकावै।।
उजळा कपड़ा मैला है मन,
पाप करम सूं कमावै धन।
झूठ कपट सूं करै जतन,
अणचायो अै छेड़ै बिघन।।
भाई-सैणां री कदर नी जाणै,
खुद री खांचै खुद री ताणै।
मद पीवै अर मोजां माणै,
बात मरम री नहीं पैचाणै।।
सगा-प्रसंगी री प्रीत नी पाळै,
चढी नगटाई आंरी ऊंचै माळै।
पराई जाई नैं घात अे घालै,
भूखा दायजै रा जींवती बाळै।।

मु. पो. मालकोसणी, वाया-भावी, तहसील-बिलाड़ा, जिला-जोधपुर (राज.) 342605 मो. 9680427204

बहू-बीनणी सुख भर सोवै,
सुख री गंगा सदा ही बैवै।
जिण घर पराई जाई रोवै,
लिछमी वासो उण घर ना होवै।।
बाबुल रै काळजीया री कोर,
थां घर काम करै बण ढोर।
कोयलड़ी कहूकै नाचै मन मोर,
घर री सोचै बा आंठूं पोर।।
सगळा घरां री इच्छा पूरावै,
अन्नपूर्णा रो बा रूप लखावै।
उण चिड़कली नैं क्यूं सतावै,
दुष्टी उणसूं कांई लेणी चावै।।
खुद री बेटी घणी व्हाली लागै,
दोरी छिंकतां उळबाणा भागै।
होवै जुकाम रात भर जागै,
पकड़ भोगनो अे बैठै पागै।।
पराई जाई नैं जे बेटी जाणो,
मिनखपणा रो धरम पिछाणो।
बार-बार इण जूण नीं आणो,
आगै मिलसी नहीं ठिकाणो।।
पीपळ चकवी नैं समझावै,
खुद गरजी री अै बातां बतावै।
बेटी सबद रो अरथ बतावै,
बिना बेटी जग पार नीं पावै।।
चकवी आंख्यां बरसण लागी,
उडी डाळ पीपळ री आगी।
पीपळ थपकी व्हाली लागी,
अब सोऊंली घणी में जागी।।
पीपळ गोद्यां चकवी सोगी,
दुनियादारी रै सुपनै में खोगी।
'श्याम' सासरै सुख जे सांतरो,
बेटी पराई आ कियां होगी।।

◆◆

ISSN : 2320-0995

न्यायाधिपति गोपाल कृष्ण व्यास

ओळ्यूं

प्रेम भरी पैली निजर री, ओळ्यूं घणैरी आवै है
देख हिवड़ै री मूरत नै, नैणां आंसू ढळकावै है

सूरज उगतां हूंक उठती, थांरी सूरत नै देखण री
बिन देख्यां थांरो मुखड़ो, तिरस न बुझती हिवड़ै री

मनड़ो म्हारो जाणै हो कै, हिवड़ो थांरो है सांतरो
मन भावणी आंख्यां में, मन थांरो मनभावण हो

ठंडो-ठंडो बायरियो ओ, हिवड़ै हेत जगावै है
ओळ्यूं थांरी काळजियै, मिलणै री आस जगावै है।

उडीक

काळा-काळा बादळिया, हिवड़ै हेत जगावै
उमड़-घुमड़ आंधी सागै, क्यूं बिना बरसियां जावै?

हळ खड़णिया करसा भाई, बाट जोवता रैवै
क्यूं लेवे रे सांवरिया! जीव-जिनावर रोवै

अध्यक्ष, राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग, बगला नं. 1/46, गांधीनगर, जयपुर मो. 9829027317

खाली कागद लेखक नैं, खेत सरीसा लागै
कलम 'हळ' सूं खड़-खड़ नै, शब्द उगाणा चावै

कलम री स्याही सूखै तो, आंसू नै स्याही बणावै
हिवड़ै रा आखर चोब-चोब नै, शब्दां रो धान उगावै

सियाळो उनाळो भोग्यो, चौमासो बिरखा बरसाव...

खोड़िलाई रो देव

खोड़िलाई रा रूप मोकळा, जुबान स्यूं सोट चलावै
बिना लड़ियां मिनखां नैं भी, घर स्यूं दूर भगावै

खोड़ीली सासू छौरै री, बहू नैं जीवण कोनी देवै
खोड़िलाई नणद बाईसा री, भौजी नैं तळती रैवै

अफसर टणकाई करतो-करतो, खोड़िलाई करतो रैवै
चोखी बात बतावण वाळा भी, खोड़िलाई सूं डर जावै

खोड़ीलां सूं इज्जत बचावण, मैदान छोडनै न्हाठै
भांत-भांत रा खोड़ीला घूमता, आपरा लठ बजावै
भोळा-भाळा मिनख आपरो, मुस्किल सूं मान बचावै।

◆◆

ISSN : 2320-0995

छगनराज राव 'दीप'

गांव

लोक-लाज मरजाद कठै है,
पैली वाळो गांव कठै है!

चौक मांयलो बरगद कटियो
आंगणियै सूं नीम ई हटियो
पुरखां रो पैरावो बदळ्यो
सोगरै रो बणग्यो बटियो
पणघट अर पोसाळ कठै है,
पैली वाळो गांव कठै है!

गायां रो घमसाण दीखै नीं
बळदां संग किसान दीखै नीं
अठै कायदा-काण दीखै नीं
गोरी घूंघट में दीखै नीं
झांझर री झणकार कठै है,
पैली वाळो गांव कठै है!

भोजन रेडीमेड ई लावै
रोटी पोवतां ताव आवै
बाटी-दाळ क्यूं नीं भावै
फास्ट-फूड चाव सूं खावै
बाजरियै री राब कठै है,
पैली वाळो गांव कठै है!
सेवा चाकरी करण वाळा
नेम-धरम नैं राखण वाळा

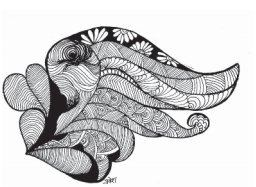

3 क 19, मधुबन हाउसिंग बोर्ड, बासनी, जोधपुर 342005 मो. 9414301484

अपणायत नै मानण वाळा
सगळा साथ निभावण वाळा
प्रीत रीत रो भाव कठै है
पैली वाळो गांव कठै है!

काका-बाबा, भाई-बाई
घट्टी गमगी चक्की आई
सोटी सूं कुण करै धुलाई
वासिंग मसीन घर-घर लाई
सरवर भरियो घाट कठै है,
पैली वाळो गांव कठै है!

◆◆

फार्म नं. 4, नियम-8

पत्रिका रो नांव	:	राजस्थली
प्रकाशन री ठौड़	:	श्रीडूंगरगढ़
प्रकाशन री अवधि	:	तिमाही
मुद्रक	:	महर्षि प्रिंटर्स, श्रीडूंगरगढ़
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
प्रकाशक	:	महावीर माली
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
संपादक	:	श्याम महर्षि
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
उणां शेयर होल्डरां रा नांव अर ठिकाणा, जिणा कनै कुल पूंजी रा 10% सूं बत्ता शेयर है:		कोई कोनी

म्हैं महावीर माली घोसित करूं कै ऊपरलो विवरण म्हारी जाणकारी अर विस्वास रै मुजब सत्य अर वास्तविकता माथै आधारित है।

महावीर माली
प्रकाशक

विनोद सोमानी 'हंस'

अेक

आंधी जियां आया अर तूफान ज्यूं गया
हाथ यूं जोड़्या जाणै दिखाई व्है दया
ईद रा चांद ज्यूं वांरा दरसण हुवै
गिरगांट री जूण नित बदळै रंग नया
मांयै सूं छुरी-कांटा ऊपरां सूं मोम ज्यूं
तीरथ धोक सोच रैया पाप गळ गया
परजा री देख पीड़ टपकावै आंसूड़ा
डाढां सूं पीवै रगत भूल्या सै हया
खुद ही धोवै अर खुद ही निचोड़ नाखै
नारीसाला चला रैया नित रोवै निर्भया

दोय

अमरयो है कुण अठै
हा राजाजी आज कठै
धीणो घरां हो धाप नै
छाछ सारू आज नटै
गाडी घोड़ा हा घर में
मोळ दिन कुण पटै
घी ढुळै हो खीचड़ी में
मैंगाई में कुण खटै
ग्यान गंगा बैवती ही
गुरु बिना कुण डटै

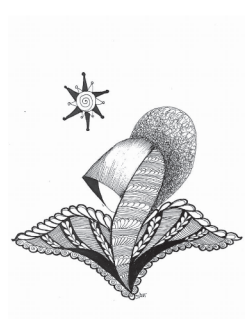

42/43, जीवन विहार कॉलोनी, आनासागर सरक्यूलर रोड, अजमेर 305004 मो. 9351090005

डॉ. कृष्णा आचार्य

जोग-संजोग री बातां

आणंद आपरै मां-पिताजी सागै वर्माजी रै अठै छोरी देखण नै जा रैयो हो। मन मांय लाडू फूट रैया हा। सोच रैयो हो कै कियां बात करसूं। गाड़ी रै सीसै मांय बार-बार आपरो उणियारो देख'र मन ई मन मुळकतो जा रैयो हो। खुद नै मन ई मन कैयो, उणनै बुरो कोनी लागसूं। औ देख'र उणरी बैन हंस पड़ी, पण वा बोली कीं कोनी। मां-बाप भी राजी हा कै छोरो वांरी पसंद सूं ब्यांव करसी। आज रै जुग मांय इयां होवणो किण मां-बाप नै चोखौ कोनी लागसी। वर्माजी हाल तांई भायला हा, अबै सगपण हो जावण सूं सग्गा हो जासी। दोनूं घर और गैराई सूं जुड़ जासी। वर्माजी री लुगाई अर आणंद री मां बीचाळै ई घणौ हेल-मेल है। मिलण-जुलण रै अलावा टेम-टेम सारू मोबाईल माथै भी घणकरी बातां करती रैवै।

मां बतायो हो कै छोरी भणियोड़ी, फूटरी, चतर अर साफ विचारां वाळी है। जिसी आपां चावता हा, ठीक बिसी। अबै फुटरापै रा के मतलब हुवै है? जिको खाली सरीर सूं फूटरो हुवै या जिको दिखतै ई मन मांय आपरी जग्यां बणा लेवै। इयां तो आणंद माथै मरण वाळी घणी है, पण वौ सिरफ आपरी पसंद री छोरी चावतौ हो, इण सारू ई वौ मां सूं छोरी रै बारै मांय सुण'र सागै आयग्यौ। सगळा वर्माजी रै घरै अेकै सागै बड़िया।

वर्माजी अर वांरी लुगाई सगळां री आगै बध'र आवभगत करी। अठीनै-बठीनै री थोड़ी-भोत बातां करण रै सागै नास्तै री बारी आयी तद आणंद री मां वर्माजी री लुगाई नै कैयो, ''अबै कुसुम बिटिया नै बुलाय दो!''

''हां, हां, अबार बुलावां सा!''

उस्तां री बारी रै मांय, जूंझारजी री चौकी वाळी गळी, बीकानेर (राज.) 334005 मो. 8619402147

 ISSN : 2320-0995

इण दौरान वर्माजी अर आणंद रा पिताजी कारोबारी बातां करतां अेक-दूजै कमरै मांय चला गिया। वर्माजी नै आपरौ होवण वाळो जंवाई घणो ई चोखो लाग्यो। वै उणनै मन ई मन आपरौ आसीरवाद दे दीनो। फेरूं आणंद आपरै मां-बाप रो अेकलो छोरो हो अर अबै तो वो आपरै बाप रै कारोबार मांय हाथ भी बंटावणो सरू कर दीनो हो।

इत्तै मांय कुसुम आपरी मां सागै सज्योड़ी कमरै मांय आयगी। सगळा उणनै देखता ई रैयग्या। साच मांय कुसुम कोई परी सूं कमती कोनी लाग रैयी ही। केई मिनटां बाद थोड़ी-बेसी बातां कर'र आणंद री मां-बैन वर्माजी री लुगाई सागै मकान देखण रै मिस बारै चला गिया। अबै कमरै मांय कुसुम अर आणंद अेकला ई हा। आणंद पैलां तो थोड़ो सकपकायो फेरूं सहज भाव सूं कुसुम सूं बातां करण लाग्यो। हालांकै दोनूं पैला भी आपस मांय मिल चुक्या हा अर फोन माथै ई कणै-कणैई बातां करता रैया हा। पण अकेलै मांय वै दोनूं पैली बार ई मिल रैया हा। इत्तै मांय नौकर कोफी लेय'र आयग्यो।

''ल्यो!'' कुसुम कोफी रौ कप आणंद नै झलावती बोली।

''अर थे?''

''हां, म्हैं भी तो लेय रैयी हूं।'' कैवतां थकां कुसुम कोफी रौ अेक कप आपरै हाथां मांय ले लीनो। ''और के हाल-चाल है आपरो?'' आणंद बतळावण रै मिस बोल्यो।

''साची कैऊं... बिल्कुल भी चोखी कोनी!'' कुसुम कोफी रौ कप आपरै मूंडै सूं लगावती गंभीरता सूं कैयो।

''कांई!... म्हैं समझ्यो कोनी? ...आपनै जिको कैवणो है, बेहिचक कैव देवो। आपनै म्हैं पसंद हूं या नीं... म्हनै आपरो हर फैसलो मंजूर होसी।''

''दरअसल... म्हैं कैवणो चाऊं कै... आणंद बाबू, थे बुरो मत मानिया। म्हैं आपसूं औ कैवणो चावती कै आपनै जिकी छोरी पसंद करसी वा घणी ई बडभागण होसी, पण... म्हनै थे माफ करो आणंद बाबू... म्हैं... म्हैं कोई और छोरै नैं पसंद करूं, जिको म्हारी कॉलेज मांय ई भणै।'' कुसुम अेक सांस मांय ई आपरी बात कैयगी।

''अर आपरां माता-पिताजी!... वांनै इण बारै मांय ठा है?'' आणंद हैरान होवतो पूछ्यो।

''वां लोगां नै इण बारै मांय ठा कोनी... क्यूंकै... इण बारै मांय वांनै बतावण री म्हनै हिम्मत कोनी होयी सा।'' कुसुम हिचकिचावती बोली।

''वा जी वा! फेरूं मां कैवती ही कै छोरी घणी हिम्मत वाळी है।... अब थे बतावो कै थे म्हनै या म्हैं आपनै रिजेक्ट कर देऊं तद आपां दोनूं रै मा-बापां माथै कै गुजरसी, ठा है? और तो और, आपां दोनूं रै बापां रै भायलापणै मांय जिकी खटास आसी उण रो के?'' आणंद रीसां बळतो बोल्यो। कुसुम माथौ झुकायोड़ी बैठी रैयी।

''थे पैला सूं ई आपरै मां-बाप नै औ सब बता दियो होवतो तो... अबै के करां? कीं समझ नीं आ रैयो है।''

''म्हैं इणरै बारै मांय कोई फैसलो लेवण रौ सोच ई रैयी ही कै आप सैंग आयग्या।... इयां करूं... म्हैं ईज बारै जाय'र मम्मी-पापा नै सगळो साच बता देऊं।'' कुसुम सोफै माथै सूं उठती बोली।

''अर फेर के होसी?''

''होवणो के है? वै म्हारो कॉलेज जावणो छुडाय देसी'', कुसुम रोवणी होवती बोली।

''प्यार करण री हिम्मत तो है पण उणनै पावण रो साहस कोनी... अर आपरै सागै म्हे सगळा पीसीजसां, उणरो कांई?''

कुसुम रोवती-रोवती बारणै कांनी बधी।

''अरे, अबै आप कठै जा रैया हो सा!'' आणंद उठ'र उणरो मारग रोकतो बोल्यो।

''कैयो नीं कै मम्मी-पापा नै सगळौ साच बतावण नै जाय रैयी हूं... बियां भी, आज नीं तो कालै वांनै ठा पड़सी ही।''

''देखो, म्हैं आपरो दरद समझ सकूं... अर भलांई आप म्हारी लुगाई नीं बणो, पण आपां आछा दोस्त तो हो ई सकां हां अर अेक साचो भायलो कदैई आपरै भायलै नै मुसीबत मांय अेकलो नीं छोड सकै।''

आणंद री बात सुण'र कुसुम री आंख्यां सूं आंसूड़ा बैवण लाग्या। इत्तै मांय दोनूं रा घरवाळा हंसता-बतळावण करता मांयनै आयग्या।

''अरे, थे दोनूं तो कीं खायो ई कोनी!'' आणंद रा पिताजी आगै कीं बोलता कै आणंद आगै बध'र वांरी बात बीच मांय ई काटतो बोल्यो, ''पापा, घरै चालो!''

आणंद री बात सुण'र अर उणरै चेहरै माथै आयोड़ा भाव देख'र सगळा हैराण होय रैया हा। वर्माजी री लुगाई पूछ्यो, ''बात के हुई बेटा? म्हां लोगां सूं कोई भूल होयगी के?'' ''मां, घरां चाल'र बात करसां!'' आणंद वर्माजी री लुगाई नै कोई पडूत्तर नीं देंवतो बोल्यो।

आणंद रा घरवाळा वांनै बारै जावतो देख'र, वै भी अचकचाता वांरै लारै-लारै चाल पड़्या। घरै आय'र मां कारण पूछ्यो तो आणंद पडूत्तर दियो, ''म्हनै कोनी करणी उण छोरी सूं सगाई।'' आणंद दुखी होवतो सगळा नै असलियत बतळा दी। घरवाळा भी सच्चाई जाण'र हैराण हुया। आखिर आणंद री मां बात नै बीच मांय संभाळती मिसेज वर्मा नै फोन माथै कैयो, ''आणंद अबार ब्यांव खातर त्यार कोनी। वो जद त्यार हो जासी जणै ई कीं जबाब देय सकांला।'' मां दुखी होय रैया ही कै छोरो कियां काळजै माथै भाटो राख'र औ सैंग सैण कर लीनो। अबै तो बदनामी भी इणरी ई होसी। खैर, जिको भी हुवै, इण मांय ईज सगळां री भलाई है।

◆◆

ज्योति राजपुरोहित

नदी रो घमंड

समदर सूं मिलनै आज नदी घणी खुस ही। समदर नदी नैं इत्तो राजी हुवण रो कारण पूछ्यो तो नदी उछळती कैयो, ''कित्ता ई बरसां सूं म्हारै बिचाळै पड़तो अेक भाखर म्हनै थारै सूं मिलण नीं देंवतो। घणा सालां सूं म्हैं उण भाखर नैं तोड़ण री आफळ करै ही। आज उण भाखर नैं तोड़ न्हाख्यो। अबै म्हैं सगळां नैं चेताय'र आयी हूं कै जे कोई म्हारै मारग में आवैला तो उण रा हाल ई भाखर जैड़ा व्हैला।'' समदर हंस्यो अर बोल्यो, ''बैनां, अेक काम करजै, वा अेक तरफ वेंत ऊभी है, उण मांय सूं दो-चार लकड़ी तोड़नै ल्याव, म्हनैं चाईजै।'' नदी तो पूरै वेग सूं गई अर वेंत पर कूदी, पण वेंत तो नीचै निवगी। नदी रो पाणी आगै गयो तो वेंत पाछी ऊभी व्हैगी। वेंत नैं ऊभी देखनै नदी नैं रीस आयगी। नदी पाछी दुगणै जोस सूं वेंत माथै वार करयो पण ओ कांई, वेंत तो जठै री वठै, टस सूं मस नीं व्ही। नदी जित्तो वार करै परिणाम वो ई मिलै। थाकी-हारी नदी पाछी समदर कनै आयगी।

समदर पूछ्यो, ''क्यूं बैन, वेंत री लकड़ी कठै?''

''नीं टूटी वेंत, भाखर नैं म्हैं तोड़ दियो पण वेंत री अेक लकड़ी नैं तोड़ नीं सकी, अैड़ो क्यूं?'' नदी पूछ्यो।

समदर बोल्यो, ''देख बैना, भाखर नै थूं तोड़ दियो, कारण कै भाखर मांय अक्कड़ ही पण वेंत नैं नीं तोड़ सकी, क्यूं कै उणमें लुळताई ही। इण दुनिया में जका भाखर ज्यूं अक्कड़ वाळा है, वांनै तोड़णा साव सौरा है, पण वेंत रै ज्यूं खुद नमवा वाळा नैं कुण ई नीं तोड़ सकै।''

समदर री आ बात सुणनै नदी चुप होयगी।

◆◆

43, Bangloj City, Sanghat Residence, Ahamdabad H/W Village Palanpur, Dist-Banaskanta, Gujrat-385001 *मो. 9601913642*

बसन्ती पंवार

नींद उडगी

दिनूगै सासूजी रै चाय लेय'र गई तो वै म्हनैं अचूंभै सूं देखता थकां बोल्या, ''अे बीनणी, औ थारै कांई हुयो?'

''कीं नीं।''

''पर थारी आंख्यां सूज्योड़ी कीकर है?''

''मम्मी जी, रात रा नींद कोनी आयी।''

''क्यूं? थारी तबीयत तो ठीक है नीं?''

''हां, वा तो ठीक है पण...।''

''पण... कांई?''

''औ जकरबर्ग है नीं...।''

''औ कांई कोई नूंवो जिनावर है? पैलां तो कदैई औ नांव नीं सुण्यो!''

''औ जिनावर नीं, मिनख है मम्मी जी।''

''म्हनैं तो कीं समझ में नीं आयो। जे औ मिनख है तो थारी नींद सूं इणरो कांई लेणो-देणो?''

''सुणो, औ जकरबर्ग वॉट्सअैप, फेसबुक, इंस्टाग्राम रो मालिक है।''

''थूं उणनै कीकर जाणै? कठैई थूं कंवारी ही जणै रो तो कोई चक्कर...।''

''जाणण री कांई बात होई, उणरै कारणै ई तो नींद नीं आयी। वो तो सुवण ई नीं दीवी।''

''हेंऽऽ ...कठै है वो? काढ उणनै बारै... बेसरमी... छिनाळ... थूं कांई कैवै है? थनै कीं ठाह है?''

''मम्मी जी, म्हारी बात तो सुणो। खाली म्हारी बात ई नीं है, वो तो सैंसार रा तीनसौ-चारसौ करोड़ लोगां नैं नीं सुवण दिया। सगळा...।''

90, महावीरपुरम, चौपासनी फनवर्ल्ड रै लारै, जोधपुर 342008 मो. 9950538579

 ISSN : 2320-0995

म्हारी बात समझ्या बिना ई वै तो नॉनस्टॉप गाळियां ठरकावण लाग्या, जाणै वै इण विसै मांय पी-अेच.डी. कर राखी हुवै। सुबैसाणी घर मांय तो महाभारत मंडग्यो। हाका सुण'र टाबर अर टाबरां रा बाप ई उठग्या। अै बारै आय'र बोल्या, ''अरे मां, कांई बात हुयी?'' अै म्हारै साम्हीं जोयो तो म्हनैं हंसी आयगी। उणां रै कीं समझ में नीं आयो। मम्मी जी बोल्या, ''बता, कठै है वो? अर थूं... थूं रातै कठै ही?''

''म्हैं तो अठै ई हो, अबार थांरै साम्हीं ई तो कमरै मांय सूं आयो हूं।''

''वो जरको कुण है? जिणरै कारणै इण लाडी नैं नींद नीं आयी, वो इणनै सूवण नीं दीवी?''

''जरको... कुण जरको? म्हैं तो उणनै नीं जाणूं।''

''तो पूछ इण सती सावित्री नैं।'' वै म्हारै साम्हीं देख्यो तो म्हैं हंसती-हंसती बोली, ''जरको नीं... जकरबर्ग।''

''ओहो, तो आ बात है। अरे मम्मी, औ जिको मोबाइल है नीं, उण मांय जिको सै कीं दीखै, उण जरकै रै कारण ई है। थांरै कनै तो बटण वाळो फोन है क्यूंकै थांनै एंड्रायड फोन चलावणो नीं आवै। म्हारै मनै जिको फोन उणमें थे कदै-कदैई फोटुवां कै भगवान रो वीडियो देखो, वै रातै सै कीं बंद होयग्या। थांनै तो ठाह है कै सूंवती बेळा ई बगत मिलै। ज्यूंकै रात रा थांरी बीनणी नूंवी खावण री चीजां बणाई, उणरी फोटू घाली। थांरा पोता-पोती कोई चितराम उकेरिया, उणां री फोटू घाली पण वा तो आगै जावै ई नीं, घड़ी-घड़ी फोन चेक करयो। क्यूंकै लोग देखै तो लाइक-कमेंट करै, घणा नीं तो 10-20 तो मिल ई जावै। इण सगळै झमेलै रै कारण नींद नीं आयी। औ जकरबर्ग थांरी बीनणी नै कांई, इण चिंता में किणनै ई नीं सुवण दियो। अबै तो थांनै बात समझ में आई नीं?''

''आ कोई बात हुई, मसीनरी है, खराबी होय ई जावै। आपां ई बीमार होवां ई कां कै नीं? जे औ नीं चाल्यो तो अैड़ो कांई पहाड़ टूट पड़्यो? औ फोन है कै अमल रो पूड़ो, जिणरै नीं मिल्यां घणकरा लोगां रो काम नीं चालै! थांनै टाबरां सारू कै आया-गयां सारू बगत मिलै? अरे, अठै तांई कै बूढा-ठाडा माईतां सारू ई इणरै कारण बगत नीं मिलै। यूं नीं कै टाबरां रै कनै बैठां, वांनै कहाणियां सुणावां, चोखा संस्कार देवां, माईतां री आसीस लेवां। अरे थे तो अंग्रेजां रो गोलीपो छोड'र इण मसीनड़ी रा गुलाम होयग्या हो। अबै ई कीं नीं बिगड़्यो है। सूंवती बेळा हाथ में मोबाइल नीं, पोथी होवणी चाईजै। आखै दिन रा चोखा-भूंडा कामां रो हिसाब होवणो चाईजै। औ ईज जिनगाणी नैं सुधारैला, आ मसीन नीं, जिणनै देख'र थे गैला व्है ज्यूं अेकला ई मुळकता रैवो।''

बोलता-बोलता वै थाकग्या तो चुप होयग्या। म्हैं सोचण लागी कै अै अणपढ नीं, भण्या-लिख्या अणपढ तो आपां हां जिका जाण'र अणजाण बण्योड़ा हां... जाग्योड़ा सूता हां... तो ई अै जगाय रैया है। अबै ई नीं जाग्या तो...।

◆◆

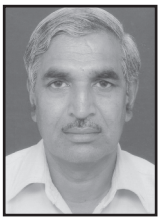

डॉ. मदन सैनी

आज री राजस्थानी भासा रो कुरब-कायदो

दुनिया री सगळी भासावां रो बिगसाव बोलियां सूं हुवै। बोलियां रा सबदां सूं सबदकोश बणै अर साहित्य रो सिरजण हुवै, पण साहित्य रै सिरजण सूं पैलां बोलियां रै सबदां सारू व्याकरण अर कुरब-कायदा थिर करया जावै, जिणसूं किणी भासा री ओळखाण हुवै अर बा भासा आपरी व्याकरण रै पाण फळै-फूलै। इण दीठ सूं देखां तो आपणी राजस्थानी भासा अर इणरी व्याकरण घणी गीरबै-जोग है।

आपां राजस्थानी वर्णमाळा री बात करां तो इणरा आखर देवनागरी वर्णमाळा रा ईज है, पण आं मांय थोड़ी-भोत खूबियां भी है, जिणरो इण भासा रै भणेसरयां अर सिरजकां नै ध्यान राखणो चाईजै। जियां राजस्थानी में 'ढ' रो उच्चारण 'ढ' ईज हुवै (ढ़ नीं)। इण सारू 'ढ' वर्ण रै हेठै बिंदी (नुकतो) नीं लगाणो चाईजै।

इणी भांत देवनागरी वर्णमाळा में 'ल' वर्ण है, जको राजस्थानी में 'ल' तो बरत्यो ई जावै, पण इणरै नेड़ै री ध्वनि रो वर्ण 'ळ' भी बरत्यो जावै। हिंदी में 'ळ' रो प्रयोग नीं हुवै, पण मराठी अर संस्कृत वर्णमाळा में 'ळ' बरत्यो जावै। 'ल' अर 'ळ' रो प्रयोग राजस्थानी में उच्चारण अर अरथबोध री दीठ सूं न्यारो-न्यारो हुवै।

'सैनी-सदन', चिमनाराम माळी रै कूवै कनै, काळू बास, श्रीडूंगरगढ़ (राज.) मो. 7597055150

 ISSN : 2320-0995

राजस्थानी में 'ए' स्वर री ठौड़ 'अे' अर 'ऐ' री ठौड़ 'अै' रो प्रयोग करयो जावै। वर्णमाळा में दंत्य, तालव्य अर मूर्धन्य (स, श, ष) मांय सूं फगत दंत्य 'स' रो प्रयोग घणो ई चलण में रैयो है। इणरो लूंठो कारण मध्यकाळ (15वीं-16वीं सदी) री भगत कवियां री भासा ई मानी जावै। तुळसीदासजी री रामचरितमानस अर मीरांबाई रा पदां में इणी 'स' रो प्रयोग हुयो है।

इणी भांत राजस्थानी 'ओकारांत' भासा है, पण मध्यकाळ में ब्रज, अवधी, राजस्थानी रा संत-भंगत आपरी रचनावां में 'औकारांत' सबदां रो प्रयोग करता रैया, जिणरो प्रभाव राजस्थानी में अबार भी देखण में आवै, जको ठीक नीं है। भगतीकाळ (मध्यकाळ) में मीरांबाई, मेहाजी गोदारा, जांभोजी, जसनाथजी इत्याद री रचनावां में अैड़ा सबद-रूप देख्या जाय सकै, पण भासा रै बिगसाव रै चालतां आज री व्याकरण में अैड़ा सबद उच्चारण री दीठ सूं आपरै मानक अर टकसाळी रूप में ईज काम में लिया जावै।

आधुनिक राजस्थानी रो रूप निरधारण करणै में राजस्थानी रा चावा भासाविद अर व्याकरण-सिरजक नरोत्तमदास स्वामी नैं नीं भुलाया जाय सकै। बै राजस्थानी ग्रंथां रो संपादन भी करयो अर भासा रो रूप-निरधारण करणै री जबरी खेचळ भी करी। इणी कड़ी में ठा. रामसिंह, सूर्यकरण पारीक, रावत सारस्वत, शंभुसिंह मनोहर जैड़ा विद्वानां नैं भी नीं भुलाया जाय सकै। आं रै कारज माथै फेर चरचा करांला।

अठै राजस्थानी भासा सारू ध्यान देवण री कीं बातां माथै आपरो ध्यान खींचणो चावूं। आपां हिंदी रै स्सारै सूं ई सरलता सूं राजस्थानी में लिख सकांला, क्यूंकै आपणी भणाई हिंदी सूं ईज हुई है, इण सारू हिंदी अर राजस्थानी रा बोलचाल रा सबदां माथै ध्यान देवणो जरूरी है। जियां—मैं (म्हैं, हूं), हम (म्हे), तुम (तूं, थूं), हम (आपां), आप (थे), यह (औ), अरे (ओ, अरै), इस (इण) इसे (इणनै), इसको (इणनैं), में (मांय, में), और (अर), से (सूं), कहा (कैयो), कई (केई), हमारे (म्हारै), तेरे (थारै), तुम्हारे (थांरै), या (का), इधर-उधर (इन्नै-बिन्नै), आसपास (आसै-पासै), ऐसे-वैसे (इयां-बियां), क्या (कांई), तरह (तरै, दांई), दाहिना (जीवणो), बायां (डावो), इत्यादि (इत्याद), कुछ (कीं), जैसा (जैड़ो) अर ऐसा (अैड़ो) आद-इत्याद।

आ थोड़ी-सी बानगी है। बियां राजस्थानी में आं सबदां रा मोकळा रूप-भेद है, जका न्यारी-न्यारी ठौड़ां रूप बदळता निगै आवै, पण अै रूप भासा-विग्यान री दीठ सूं ओपता लखावै, सबदकोश में आं री ओपती ठौड़ हुवै, पण व्याकरण अर मानक भासा री दीठ सूं आं मांय सूं अेक-दो रूप ई प्रचलन मांय रैवै। इण दीठ सूं अठै कीं सबदां री बानगी देखो—

मैं = (म्हैं, हूं) अहम्—अम्ह—अम्है—अम्हैं—म्हैं—मैं
अहम्—अम्ह—अम्है—अम्हूं—म्हूं—हूं

लय-भेद री दीठ सूं 'मैं' सारू म, मं, में, मैं, म्हूं, हूं, म्हैं इत्याद रूप भी मिलै।

से = (सूं) से, सैं स्यूं, उं, ऊं इत्याद।

राजस्थानी मांय क्रिया-पद अैकारांत हुवै, अेकारांत नीं, जियां—

आए, जाए, उठे, बैठे, देखे, पढे री ठौड़ आवै, जावै, उठै, बैठै, देखै, पढै, सोचै, समझै अर लिखै आद।

इणी भांत क्रिया-पद अर संग्या-पद 'ओकारांत' हुवै, 'औकारांत नीं, जियां—

आवणो, जावणो, उठणो, बैठणो, देखणो, पढणो, सोचणो, समझणो अर लिखणो इत्याद क्रियावां दांई संग्यावां मांय भी रामूड़ो, मोहनियो, सोहनियो इत्याद सबदां रै लारै 'ओ' मात्रा लगाई जावै, 'औ' री नीं, क्यूंकै मध्यकाळ में हिंदी री उपभासावां मांय 'औ' री मात्रावां लगाई जांवती, जकी भासा रै विकास री दीठ सूं अबार 'ओ' रै रूप में थिर है, जदकै क्रियावां में 'अे' हिंदी में बरती जावै, राजस्थानी में 'अै' रो रूप थिर है। आं सबदां री बानगी देखो—

आवइ (आवै) आवइ—आवै—आवे—आये—आए
जावइ (जावै) जावइ—जावै—जाये—जाए
उठइ (उठै) उठइ—उठै—उठे
बैठइ (बैठे) बैठइ—बैठै—बैठे
देखइ (देखै) देखइ—देखै—देखे
पढइ (पढै) पढइ—पढै—पढे
सोचइ (सोचै) सोचइ—सोचै—सोचे
समझइ (समझै) समझइ—समझै—समझे
लिखइ (लिखै) लिखइ-लिखै-लिखे इत्याद।

ऊपर कोष्ठक मांय लिख्योड़ा सबदां रो उच्चारण राजस्थानी मांय है अर आं रै पछै लिख्योड़ा सबद-रूप हिंदी मांय बरत्या जावै। जियां—आवे, आये, आए, जावे, जाये, जाए, उठे, बैठे, देखे, पढ़े, सोचे, समझे, लिखे इत्याद।

उच्चारण सारू ध्यान देवण री बात आ है कै किणी सबद रो बार-बार उच्चारण करयां आपां खुद उणरै सही उच्चारण नैं जाण सकां हां। दाखलै सारू 'स' रा दो रूप 'श' अर 'ष' रै उच्चारण सारू 'सड़क', 'संतोष', 'आशुतोष', 'तुष्टि', 'पुष्टि', 'पुष्प' इत्याद सबदां रो बार-बार उच्चारण करयां आं मांय आपनै झीणो फारक साव समझ में आय जावैलो।

'अैकारांत' सबदां रै उच्चारण सारू दाखलो देवां तो आपां नैं हिंदी रै 'है' रै उच्चारण नें समझणो पड़ैला। जियां—'वह जा रहा है' वाक्य में है रो उच्चारण 'ह', 'हे', 'है' (हइ) नीं हुय'र 'हे-है' रै बीच री धुनि है। अैड़ा आखरां माथै 'बळ' (जोर) देवणो पड़ै। आप ऊपर दियोड़ा इण भांत रा सबदां में 'केवे' नीं 'कैवै' लिखणो पड़सी। इण रो मतलब औ नीं कै आपां अैड़ा सबदां रो प्रयोग नीं करां, पण अठै सावचेती री दरकार है, जियां—सेवै (साधना), सैवै (सहणो) रो दाखलो—बो मुसाण सेवै, चिड़कल्यां इंडा सेवै। कोई किणी रो जुलम क्यूं सैवै? इत्याद।

इणी भांत 'औकारांत' सबदां रै बिगसाव री बानगी आपरी निजरां है—

आवउ—आवौ—आवो—आओ	राजस्थानी— आवो, हिंदी—आओ
जावउ—जावौ—जावो—जाओ	राजस्थानी—जावो, हिंदी—जाओ
पधारउ—पधारौ—पधारो	राजस्थानी—पधारो, हिंदी—पद-धारण्य
धवळउ—धवळौ—धवळो—धोळो	राजस्थानी—धोळो, धवळो, हिंदी—धवल
रउ—रौ—रो	राजस्थानी—रो

आं थोड़ा-सा दाखलां सूं आपां देखां कै राजस्थानी सबदां रो साचै अरथ में उच्चारण 'ओकारांत' ईज है।

अैकारांत अर औकारांत सबदां में जठै स्वरां रो उच्चारण आवै, बठै बै ईज हिंदी व्याकरण-सम्मत मान्या जावै। रूप-भेद री दीठ सूं प्रचलन में भोत-सारा सबद हुवै। जियां—हिंदी रै करण अर अपादान कारक 'से' रा रूप-भेद 'से, सैं, स्यूं, सूं, ऊं, उं' इत्याद मिलै। आं रो वाक्यां मांय प्रयोग देखो—घर से निकळ्यो, घर सैं निकळ्यो, घर स्यूं निकळ्यो, घर सूं निकळ्यो, घर ऊं निकळ्यो, घर उं निकळ्यो इत्याद। आं रूपां मांय सगळां सूं बेसी भू-भाग (आथूणै-उतरादै) में 'सूं' रो प्रचलन है। इणी भांत 'मैं' सर्वनांव रा रूप-भेद 'मैं, में, मं, म्है, म्हैं, म्हूं, हूं' इत्याद मिलै। पण बोलचाल में अर भासा-वैवार में सगळां सूं बेसी 'म्हैं' अर 'हूं' प्रचलन मांय है। भासा-विग्यान संकेत करै कै किणी सबद रा अेक सूं बेसी रूप प्रचलन में हुवै, तो बठै भासा रै मानकीकरण सारू उच्चारण री दीठ सूं किणी अेक या दो सबदां नैं मानक रूप में बरतणा चाईजै। हिंदी में भी उच्चारण अर अेकरूपता री दीठ सूं औ ईज कुरब-कायदो है, जियां—आवे—आये—आए, कौवा—कौआ, नयी—नई, आइये—आइए इत्याद सबदां में उच्चारण री दीठ सूं स्वर वाळा सबदां नैं ईज व्याकरण-सम्मत मान्या जावै। ऊपरला सबदां में 'आए, कौआ, नई, आइए' सबद ई ठीक मान्या जावै।

अेकरूपता अर उच्चारण री दीठ सूं ई भासा में बरतीजता सबद आदिकाळ अर मध्यकाळ रै पछै आज रै बगत में आपरो मानक रूप थिर करै। मध्यकाळ री पांडुलिपियां

मांय औकारांत बरतीज्या सबद अबार 'ओकारांत' रूप में थिर है, बठै ईज उण बगत री पांडुलिपियां मांय अनुनासिक सबदां मांय अनुनासिक आखर सूं पैलै आखर माथै अनुस्वार (बिंदी= ं) लगाईजती, इण सूं ठाह (बेरो) पड़ै कै मध्यकाळ में अैड़ा ईज उच्चारण हा, जियां—रांम, कांम, पांणी, ढांणी, कांनी, ठिकांणौ, घरांणौ, खांण-पांण, थांन-पांन इत्याद। आं सबदां में उच्चारण री दीठ सूं अबार जको थिर रूप है, बो इण भांत है—राम, काम, पाणी, ढाणी, कानी, ठिकाणो, घराणो इत्याद। इणी कारण व्याकरण रो नेम है कै जिण सबदां रै लारै अनुनासिक वर्ण आवै बां सूं पैली अनुस्वार रो प्रयोग नीं करीजै।

आपां जाणां कै हिंदी रो बिगसाव राजस्थानी रै पछै हुयो। हिंदी रो आदिकाळ राजस्थानी रै रासौ साहित्य (पृथ्वीराज रासौ, खुमांण रासौ, बीसलदेव रास) सूं सरू हुवै, पछै मध्यकाळ में मीरांबाई, जांभोजी, जसनाथजी रा पद अर साखी, बांणी अर मेहोजी गोदारा री रामायण इण भासा री सबळाई रा कीरत-थंब थरपै। इण भासा री जड़ां तो ठेठ रिग्वेद तांई ऊंडी पूग्योड़ी है, पछै लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत अर अपभ्रंसां मांय विचरती थकी आ भासा आज अेक ठावै मुकाम माथै ऊभी है। इण भासा रै आधुनिक रूप नैं रातो-मातो करणै सारू मोकळा सिरजकां खेचळ करी, आं मांय कन्हैयालाल सेठिया, राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, रावत सारस्वत, मूळचंद 'प्राणेश', डॉ. मनोहर शर्मा, अन्नाराम सुदामा, नानूराम संस्कर्ता, बैजनाथ पंवार, श्रीलाल नथमल जोशी, श्याम महर्षि, मोहन आलोक, किशोर कल्पनाकांत, गजानन वर्मा, सीताराम महर्षि, अंबू शर्मा जैड़ा मोकळा मून साधकां रो सरावण जोग सिरजण है। बठै ईज विजयदान देथा 'बिज्जी' रो राजस्थानी सिरजण इण भासा रो अमोलक खजानो है। बिज्जी री भासा अर लालसजी रै सबदकोस री चरचा आगै करांला, अठै म्हैं मध्यकाळ पछै राजस्थानी रै बिगसाव री परंपरा में ऊपर कीं लेखकां रा नांव लिख्या है। इणी कड़ी में सांवर दइया, नंद भारद्वाज, प्रेमजी 'प्रेम', देव कोठारी, भगवतीलाल व्यास, कुंदन माली, दुर्गादत्त 'दुर्गेश', वासु आचार्य, यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' अर म्हारी पीढी रा मोकळा सिरजकां अर इण भासा री पत्रिकावां में सरवर, म्हारो देस, मरुवाणी, बिणजारो, कुरजां, राजस्थानी गंगा, ओळमो, राजस्थली अर कथेसर जैड़ी पत्रिकावां री राजस्थानी रै आधुनिक रूप-निरधारण में सांतरी भूमिका रैयी है। 'राजस्थली' अर 'कथेसर' रा संपादक भासा री अेकरूपता रै पेटै आज भी सावचेती बरत रैया है। अठै अेक बात और महताऊ है, बा आ कै हरेक लेखक री आपरी निजू भासा-सैली हुवै अर हरेक पत्रिका री आपरी ढब पड़ती भासा-नीति। हिंदी री पत्रिकावां में भी आ ईज बात देखण नै मिलै। संपादकां नैं आपरी पत्रिका री भासा-नीति री दीठ सूं लेखकां री रचनावां नैं संपादित करणी पड़ै, आ बात किणी लेखक सूं अछानी नीं है।

अबै 'राजस्थांनी' सबदकोसकार सीताराम लालस, आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया अर पछै 'बिज्जी' सूं म्हारी मुलाकात री खास बातां आपसूं साझा कर रैयो हूं। सन् 1985 रै फरवरी महीनै री बात है। जोधपुर मांय डॉ. कल्याणसिंह शेखावत जयनारायण व्यास

विश्वविद्यालय रै राजस्थानी विभाग कानी सूं 8-9 फरवरी नै अेक आंचलिक समारोह राख्यो, जिणमें श्रीडूंगरगढ़ सूं श्याम महर्षि, चेतन स्वामी अर म्हैं सामल हुया। उण बगत वेद व्यास राजस्थानी भासा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रा अध्यक्ष हा। म्हे लोग सागै ई ठैरया हा। बठै लालस जी भी आया हा। म्हैं बां सूं केई देर बंतळ करी। बै बतायो कै बदरीप्रसाद साकरिया सूं भी म्हैं सैयोग लियो है, पण बां रै अर म्हारै सबदकोस में घणो फरक है। म्हैं म्हारै सबदकोस में राजस्थानी री केई हस्तलिखित पांडुलिपियां री भासा नैं आधार बणायो है। इण कारज में घणो बगत लागणै रै कारण बीजा लेखकां री रचनावां म्हैं नीं पढ सक्यो, पण 'बिज्जी' री बातां री फुलवाड़ी रा सैंग अंक (उण बगत तांई 3 अंक छप्योड़ा हा, 14वों अंक तो बां रै सौ बरस पूग्यां पछै छप्यो) म्हैं घणै चाव सूं पढ्या अर भासा-प्रयोग री दीठ सूं म्हारै सबदकोस में फुलवाड़ी रा सबदां रा दाखला ई दिया है। सीतारामजी उण बगत फगत थोड़ी देर ई बंतळ करी ही, बै कुरसी माथै बैठ्या हा अर कीं सुस्त ई लखावै हा। बां सूं भेंट करणियां री कमी नीं ही, बां कनै केई बीजा लोग आयग्या अर म्हैं पाछो श्यामजी कनै आयग्यो।

जोधपुर सूं म्हैं पाछो गांव नीं आयो, बठै सूं प्रो. भूपतिरामजी साकरिया कनै वल्लभविद्यानगर (गुजरात) पूगग्यो। साकरियाजी रै निर्देसन में म्हनै पी-एच.डी. करणी ही। बठै राजस्थानी री पांडुलिपियां, राजस्थानी भासा अर राजस्थानी सबदकोस, भासा-विग्यान अर व्याकरण रा मुद्दां माथै मोकळी चरचा हुई। इण चरचा रो सार औ रैयो कै म्हनैं राजस्थानी री पांडुलिपियां पढणी है अर बां मांय 'राम' माथै सिरज्योड़ी सामग्री नैं आधार बणायनै सोध-कारण करणो है। म्हारै सोध रो सिरैनांव राख्यो गयो—'राजस्थानी काव्य में रामकथा'। दिनांक 12 फरवरी नै म्हैं डॉ. साकरियाजी रै सागै सरदार पटेल विश्वविद्यालय पूग्यो। बठै दसवीं सूं लेयनै बी.कॉम., अेम.अे. रा सर्टिफिकेट अर माइग्रेसन सर्टिफिकेट इत्याद शोध विभाग में जमा करवायां पछै म्हनै वि.वि. रै रजिस्ट्रार साम्हीं राजस्थानी भासा नै लेयनै केई सवाल-जवाब करणा पड़्या अर पछै इणी विश्वविद्यालय रै हिंदी विभाग में सोध सारू म्हारो रजिस्ट्रेशन हुयग्यो अर 12 फरवरी, 1985 रै दिन सूं म्हनैं 'राजस्थानी काव्य मांय रामकथा' माथै सोध सारू मंजूरी मिलगी।

उण दिन मंगळवार हो। साकरियाजी आपरो प्रयोगशील राजस्थानी कविता संग्रै 'छेटो' म्हनैं भेंट करतां थकां लिख्यो, ''प्रियवर मदन सैनी नै आज उणरै पंजीकरण रै औसर माथै'' ह./12.2.85 मंगळवार। सन् 1966 में छपी आ पोथी बदरीप्रसादजी साकरिया नैं समर्पित है, जिण सारू 'वरदा' में डॉ. मनोहर शर्मा रा 'हरिरस' रै संपादन पेटै बदरीप्रसादजी नैं रंग री ओळ्यां ई इण समर्पण री ओळ्यां नीचै छप्योड़ी है—

सबद अरथ मरजाद, कवि ईसर महिमा अतुल।
रंग बदरी परसाद, सरब सुलभ हरिरस करयो।।

सोध-विसै री सिनोप्सिस तो सोध पूरो करयां पछै ई बणावणी ही, जकी थीसिस जमा करावण सूं छह महीनां पैलां सोध विभाग में जमा करवाणी जरूरी हुवै। सिनोप्सिस (सोध-कारज री रूपरेखा) पैलां पेस करणै रो अरथ औ मान्यो जावै कै इण विसै माथै सोध-कारज पैलां सूं ई करयो जाय चुक्यो है। इण सारू म्हैं दो दिन गुरुजी कनै और रैयो। बै म्हनैं केई पांडुलिपियां दिखाई अर बां रै आखरां री बणावट मांय न्यारा-न्यारा काळखंडां में आंवतै बदळाव रा दाखला ई दिया। बांरो आदेस हो कै सोध-संस्थानां सूं पांडुलिपियां री सूची लेयनै बां मांय सूं रामकाव्यां नैं 'नोट' करो अर पछै बांरी फोटो प्रतियां लेयनै भणो-गुणो, 'नोट्स' लिखो अर इण सोध-कारज नैं सांतरै रूप में समाज साम्हीं प्रगट करणै रो जस लेवो। बालाजी म्हाराज री आप माथै किरपा हुवैली, म्हारी आसीस है।

साकरियाजी री आसीस सूं म्हारी हूंस बधी। बठै ईज बदरीप्रसादजी सूं राजस्थानी सबदकोस बाबत मोकळी बातां हुई। म्हैं बांनै लालसजी सूं मिलणै री बात कैयी। बै बतायो कै लालसजी म्हारा वाल्हा मीत हा। सबदकोस रै सिलसिलै में म्हैं दो महीनां तांई लालसजी कनै जोधपुर रैयो। बै घणो लूंठो काम करयो है। पण म्हारा दोनुवां रा सबदकोस 'राजस्थानी' रा नीं, राजस्थानी-हिंदी सबदकोस है। जियां कामिल बुल्के रो अंग्रेजी-हिंदी कोश है, उणी भांत रो औ कारज है। कोस सबद रा तीन रूप है, धन रै भंडार सारू 'कोष' हुवै, तो सबदां रै भंडार सारू 'कोश' अर दूरी बतावण सारू 'कोस' सबद प्रयोग में लिया जावै। अबै राजस्थानी सबदां री बात करां तो इण रो आधार तो हिंदी-शब्दकोश ई रैयो। इणमें तत्सम, तद्भव अर परदेसी भासावां रा सबदां रै सागै-सागै बोलीगत देसज सबदां रो संग्रै करयो जावै। औ अेक आदमी रै बस रो काम नीं है, बो आपरै समै रै सिरजकां रै अर बोलचाल में बरत्या जावणवाळा सबदां रै भासा-वैवार नै ध्यान में राखतां थकां आपरै सबदकोस नै रातो-मातो बणावै, पण किणी भासा री सगळी बोलियां रा सबदां नैं किणी सबदकोस में समेटणा संभव नीं हुवै। अैड़ा मोकळा सबद सबदकोस में नीं आय सकै, जका बोलचाल में बरत्या जावै, जियां 'ज्वार-भाटो', अर 'दगड़' कैवै लड़ाई रै डंकै नैं। जदकै अै सबद राजस्थानी में 'पत्थर' रा वाचक है। आप लाठी-भाटा जंग जैड़ा सबद पढ्या-सुण्या होसी! तो हिंदी सबदकोस नैं कियां दोस देवां?

सबदकोस में सबद रै सही-गळत री जग्यां प्रचलित रूप-भेद सेती ठौड़ देवणी पड़ै, अेक सूं बेसी रूप हुवै तो 'देखो' लिखनै सही रूप कानी संकेत करयो जावै, पण किणी सबद रै सही रूप रो निरधारण करणो व्याकरण रो काम है, भासा-विग्यान रो नेम है कै बा हमेसा कठिनता सूं सरलता कानी बधती रैवै अर सबदां में बदळाव आंवता रैवै, जिण सूं रूप-भेद री अबखाई साम्हीं आवै, जिणनै अेकरूपता अर उच्चारण री दीठ सूं 'व्याकरण' सुळझावै। आचार्य बदरीप्रसादजी सूं और भी घणी बातां हुई, केई बार मिलणो हुयो अर जद म्हनैं पी-एच.डी. री डिग्री मिली, तद साकरियाजी रै घर री छात माथै म्हारै

सम्मान में आयोजित संगोष्ठी री अध्यक्षता करतां थकां आचार्यजी म्हनैं 'जीवण में सोनै रो सूरज उगैलो' री आसीस दीवी। भूपतिरामजी गोष्ठी रो संचालन कर्‍यो। कुंदन माली बठै 'रेल गई गुजरात' कविता पढी। गुरुजी अर दादागुरुजी री आसीस अजेस ई म्हारी हूंस बधावती रैवै।

रजिस्ट्रेशन पछै म्हैं बीकानेर री अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान, अभय जैन ग्रंथालय अर राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान सूं रामकाव्य संबंधी मोकळी पांडुलिपियां री फोटोस्टेट प्रतियां करवायनै बांरी भणाई अर 'नोट्स' लेवणै मांय जुटग्यो। बाद में केई पांडुलिपियां रो संपादन भी म्हैं कर्‍यो। अै पांडुलिपियां 15वीं सूं लेयनै 18वीं, 19वीं सदी तांई री ही। आं रै लिपिकाळ सूं म्हनैं राजस्थानी क्रियावां में आंवतै बदळाव रो ग्यान हुयो। बिज्जी री 'फुलवाड़ी' रा सगळा भाग म्हैं 10वीं में भणती वेळा पढ लिया हा। उण बगत बिज्जी री भासा रा खास-खास सबदां नैं म्हैं लिख भी लिया हा। अेम.अे. में मध्यकालीन काव्य पढायो जावै। उण काव्य री भासा में सूर, तुलसी अर मीरां री रचनावां पढी ही। फेर 'रामकाव्य' माथै सोध-कारज करतां थकां सूरदासजी रै 'सूरसागर' में राम रै जलम सूं लेयनै राजतिलक तांई 172 पदां में राम-कृष्ण री अभेदोपासना दरसांवती कथा अर तुळसीदासजी रै 'रामचरितमानस' री रामकथा री काव्य-भासा गैराई सूं भणी-गुणी। भगतीकाळ रा बीजा कवियां रा नांव भी पैलां गिणाया जाय चुक्या है।

सन् 1985 में ई गणगौर रै तिंवार पछै अेक दिन म्हैं, चेतन स्वामी अर मालचंद तिवाड़ी बिज्जी सूं मुलाकात सारू बोरूंदा पूग्या अर बठै दो दिनां तांई रैया। बिज्जी मोकळा लाड कर्‍या। चेतन नैं बै 'बातां री फुलवाड़ी' रा सगळा (उण बगत तेरह) भाग हस्ताक्षर करनै भेंट कर्‍या। राजस्थानी कथा-कहाण्यां-कहावतां-लोर्‍यां अर गीतां माथै मोकळी बातां हुई। बिज्जी 'दुविधा' रो अंग्रेजी उल्थो 'द घोस्ट हू लव्ड' छप्यो हो। बिज्जी बतायो कै 'दुविधा' री सूटिंग बोरूंदा में ई हुयी अर मणि कौल बोरूंदा रा कलाकारां रै सैयोग सूं ई आ फिल्म बणाई ही। (बाद में अमोल पालेकर इणी कहाणी माथै 'पहेली' फिल्म बणाई ही, जकी ऑस्कर पुरस्कार सारू नामित हुई।)

बिज्जी केई संस्मरण सुणाया। बै बतायो कै 'नूंवौ जलम' कहाणी माथै प्रकाश झा 'परिणति' नांव सूं फिल्म बणावणी चावै। इण रा डायलोग इरपिंदर लिख रैयी है। (पछै इण कहाणी रै फिल्मांकन सारू बिज्जी आपरै बेटै सदैव रै सागै श्रीडूंगरगढ़ आया अर दो दिन म्हारै घरां रैया। म्हैं बांनै श्रीडूंगरगढ़ रा धोरां माथै लेयग्यो। म्हारै गांव रा धोरा बिज्जी नैं दाय आया अर पछै 'परिणति' री सूटिंग अठै ईज हुई। बिज्जी सूटिंग रै बगत महीनै-भर अठै ईज रैया। उण वेळा अठै रा लोगां रो बिज्जी अर प्रकाश झा नैं मोकळो सैयोग मिल्यो। चेतन स्वामी अर मालचंद तिवाड़ी तो प्रकाश झा रै कलाकारां भेळा साझो ई कर्‍यो।)

बातां-ई-बातां में 'बातां री फुलवाड़ी' री भासा नैं लेयनै म्हैं बिज्जी सूं केई सवाल करया। म्हैं कैयो कै आ भासा आज रै बगत बोलीजण-लिखीजण वाळी भासा सूं मेळ नीं खावै। आखै राजस्थान री राजस्थानी पत्रिकावां में अैड़ी भासा नीं मिलै अर आपनैं टाळ, आखै राजस्थान रा राजस्थानी लेखकां री भासा भी अैड़ी नीं है। अबार तांई राजस्थानी बोलियां रा सैंग लेखक 'ओकारांत' राजस्थानी लिखै, आप 'औकारांत' लिखो। बीजा लेखक अनुनासिक सबद सूं पैलै आखर माथै बिंदी नीं लगावै, आप लगावो। इण रो कांई कारण है ?

बिज्जी भासा रै मुद्दै माथै घणा सावचेत हा। बै म्हनैं 'रूपायन संस्थान' रै दफ्तर मांय लेयग्या। बठै लाल कपड़ै में लपेट्योड़ी कीं पांडुलिपियां री अेक पोटळी ही। बै उणनैं खोली अर अेक-अेक करनै बां पांडुलिपियां री भासा सूं म्हनैं रूबरू करांवता थकां बोल्या कै आं ग्रंथां में अनुनासिक सूं पैलां अनुस्वार रो प्रयोग हुयो है। सबदां रा रूप औकारांत है। 'मुंहता नैणसी री ख्यात' (संपादक आचार्य बदरीप्रसाद) नैं इण दीठ सूं म्हैं महताऊ मानूं। उणरी भासा टकसाली है। 'फुलवाड़ी' री कथावां रै सिरजण सूं पैलां राजस्थानी भासा सारू म्हे गंभीर चिंतन करयो हो। उण बगत सीताराम लालस, सौभाग्यसिंह शेखावत, कोमल कोठारी अर म्हैं चौपासणी सोध संस्थान में काम करता हा। डॉ. नारायणसिंह भाटी संस्थान रा निदेसक हा। म्हे सगळा मिलनै 'सबदकोस' रो काम तेवड़्यो, जिणमें जिम्मेदारी रो काम सीतारामजी नैं सूंप्यो गयो अर बै इण जिम्मेदारी नैं निभाई भी। उण बगत पांडुलिपियां री भासा नैं ईज आधार बणाणै रो निरणै करीज्यो। पछै नारायणसिंहजी सूं म्हारी उधड़गी अर कोमल कोठारी रै कैवणै सूं म्हे बोरूंदा में 'रूपायन संस्थान' खोल्यो। कोमल री सलाह सूं ई अठै री कदीमी लोककथावां रै संग्रै रो काम सरू करयो अर 'फुलवाड़ी' रा तेरह भाग छप्यां पछै प्रेस बंद करणी पड़गी। अठै संगीत री रिकार्डिंग भी करीजै, लंगा-मांगणियार कलाकारां रो सैयोग करीजै। 'रूपायन' में 'वाणीपुरम' री थरपना करणी म्हारो सपनो है।

''म्हारी फुलवाड़ी री भासा अर लालसजी रै सबदकोस री भासा आं ईज हस्तलिखित पांडुलिपियां री भासा नैं मानक मानणै सूं अेक-सरीखी है।'' बिज्जी म्हनैं समझायो। पण म्हैं कैयो कै भासा-विग्यान तो कठिनता सूं सरलता कानी भासा रै विगसाव री बात कैवै, आप तो उणनैं उलटो चला दियो। इक्कीसवीं सदी कानी बधती भासा नैं 16वीं सदी कानी पाछी मोड़ दीवी। आज राजस्थानी भासा 'औकारांत' नीं है, लालसजी रो सबदकोस अर आपरी भासा ई औकारांत है। इत्तो सारो सिरजण इण भासा रै ओकारांत रूप रो साखी है, आप इणनैं कियां नकार सको हो ? राजस्थानी रै इत्तै लूंठै सबदकोस अर आपरै सबदकोस में 'पधारो, आवो, जावो, खावो, पीवो अर राम, नाम, दाम, काम जैड़ा सबद नीं मिलै, तो आं सबदां रो कांई दोस ? 'सबदकोस' में 'खेचल' सबद है, 'खेचळ' अर 'खैचळ' कठैई

नीं है, जका लोगां री जबान माथै है। अैड़ा मोकळा ई लोकप्रचलित सबद इण सबदकोस में ठौड़ नीं पाय सक्या, पण बांरो वजूद नीं मिट सकै।

म्हैं बांनै बतायो, 'रांम-कांम' रो अंग्रेजी उच्चारण 'रानम-कानम' ठीक है कांई ? म्हनैं राजस्थानी भासा रा बीजा कोशकार अर 'मुंहता नैणसी री ख्यात' रा संपादक आचार्य बदरीप्रसादजी साकरिया बतायो कै सीतारामजी 'ड़' अर 'ग्य' रो प्रयोग देसकाळ री दीठ सूं करयो है, पण अनुनासिक अर ओकारांत सबदां रै प्रयोग में देसकाळ रो ध्यान नीं राख्यो। बै बतायो कै सीतारामजी अेक व्याकरण ई लिख राखी है, जिणनैं विद्वानां अमान्य ठैराय दीवी। (पछै अकादमी इणनैं छापी। सीतारामजी अर बदरीप्रसादजी तो इणनैं नीं देख सक्या, पण भूपतिरामजी जरूर अचंभो करयो।)

बिज्जी म्हारी बात ध्यान सूं सुणता रैया अर गंभीर हुयग्या। बै कैयो कै आ तो मोटी भूल व्हैगी, पण हिंदी सूं न्यारी बतावण सारू आपां कैय सकां कै देखो, हिंदी में अनुनासिक सूं पैलां बिंदी नीं है, आपां कनै है। हिंदी में औकारांत नीं है, आपां कनै है। पण देसकाळ री दीठ सूं औ सबदकोस अपटूडेट नीं कैयो जाय सकै। फेर भी म्हैं तो म्हारी भासा में बदळाव नीं करूंला, क्यूंकै व्यक्ति-भासा री दीठ सूं म्हारी भासा तो अेकदम टकसाली है अर 'बोली छोडै गोली', आपां किणी रा गुलाम नीं हां, सो आपणी भासा क्यूं छोडां ?

फेर खासा ताळ तांई मून रैय'र बिज्जी बोल्या, ''अबै तो जोधपुर सूं 'माणक' रो प्रकासन ई सरू हुयग्यो है। इणमें लालसजी रो कोस अर कोस मांय फुलवाड़ी री भासा रा दाखलां नै प्रमाण मानतां थकां 'माणक' री भासा-नीति तै व्हैगी है, भासा जूनी है, तो छौ' भलां ही। अठै तो 'बिज्जी री स्कूल' री भासा थिर हुयगी है।

बिज्जी रै सिरजण रो केई लोगां माथै जबरो प्रभाव पड़्यो। केई सिरजक बिज्जी री 'बोली छोडै गोली' री सीख नै बिसरांवता थकां आपरी भासा में बदळाव करयो। आं सिरजकां मांय अकादेमी सूं पुरस्कृत सिरजक भी है। 'धड़ंद' अर 'भोळावण' रा सिरजक मालचंद तिवाड़ी, 'सीर रो घर' रा वासु आचार्य, 'जग रो लेखो' रा कुंदन माली, 'अंधार पख' रा नंद भारद्वाज, 'पीड़' रा दुलाराम सहारण, 'प्रभातियो तारो' अर 'अधूरा सुपना' रा नृसिंह राजपुरोहित इत्याद केई ख्यातनांव लोगां रा नांव अठै गिणाया जाय सकै, जका आपरी भासा नैं बदळी। आं मांय केई तो बिज्जी सूं ई आगै बधनै भासा रो भूगोल बदळणै रा प्रयोग ई करया। दाखलै सारू तीन वाक्य देखो—1. बो आयो हो / बो आयो थो / बो आयो छो। वाक्य री पूरणता रो सूचक सबद राजस्थानी में 'है-हो, छै-छो, थो' इत्याद न्यारै-न्यारै भू-भागां में बरत्या जावै, पण भासा-रूप में 'है' अर 'हो' ईज बरत्या जावै। बियां, आवै है, आवै छै अर 'है जी है' री ठौड़ 'छै जी छै' जैड़ा वाक्य भी देखण नै मिलै,

पण अेकरूपता री दीठ सूं सगळी ठौड़ छै, छा, छो, छी-छी रो वरतारो कियां संभव हुय सकै?

किणी भासा री खूबी उणरै भूगोल सूं भी जुड़्योड़ी हुवै। जियां सवाल उठै कै राजस्थानी कुणसी? तो इण रो पड़ूत्तर है कै जिणमें संबंधबोधक विभक्ति 'री' बरती जावै, बा ईज राजस्थानी है, जियां हिंदी में 'की' विभक्ति, पंजाबी में 'दी', मराठी में 'ची', गुजराती में 'नी' अर सिंधी में 'जी' विभक्ति रा रूप बरत्या जावै, अै रूप उण भासा रै भूगोल (प्रसार खेतर) रा सूचक है। इण बात नैं वाक्यां रै प्रयोग सूं समझी जाय सकै, जियां—

मीरां री भगती। (राजस्थानी)
मीरां की भगती। (हिंदी)
मीरां दी भगती। (पंजाबी)
मीरां ची भगती। (मराठी)
मीरां नी भगती। (गुजराती)
मीरां जी भगती। (सिंधी) इत्याद।

हिंदी अर राजस्थानी री बोलियां उच्चारण-प्रधान है अर उच्चारण में स्वर रै प्रयोग नैं ज्यादा सही मान्यो जावै। इण सारू उच्चारण माथै बेसी जोर देवणो पड़ै। हरेक भासा में पुराणा सबद प्रचलन सूं हटता जावै अर नूंवा सबद बापरता जावै, बांनै भासा में अपणावणा जरूरी है। आपणी भासावां में मुसळमानां रै सासनकाळ में अरबी-फारसी रा सबदां रो वरतारो हुयो अर अंग्रेजां रे सासनकाळ में अंग्रेजी सबद आपरी सबळाई सूं संस्कृत, अरबी-फारसी नै परै बिठायनै जिण भांत आज भणाई अर बोलचाल में आपणी भासावां माथै कब्जो कर्‌यो है, बो किणी सूं अछानो नीं है। किणी सबद रो उच्चारण तो बोलीगत हुवै, उणमें फरक हुय सकै, पण भासा में लिखती वेळा उणरो मानक रूप ई आपां साम्हीं आवै। हिंदी रै 'स्पष्ट' अर 'स्थापना' सबद नैं बोलती वेळा बिहार में 'अस्पष्ट' अर 'अस्थापना' / हरियाणा अर पंजाब में 'सपष्ट' अर 'सथापना' / बीजी जग्यां 'इस्पष्ट' अर 'इस्थापना' बोलै, पण लिखती वेळा सगळी जग्यां रा लोग 'स्पष्ट' अर 'स्थापना' ईज लिखै।

उच्चारण री दीठ सूं अठै कीं सबदां री वर्तनी री चरचा करणी जरूरी है। जिण सबद माथै जोर दियो जावै, उण माथै उलटी कोमा लगाई जावै, जियां—ठा' सबद रो उच्चारण 'ठा:' है, इणनै 'ठाह' लिखणो अेकरूपता री दीठ सूं सही मान्यो जावै।

अठै कीं सबदां री वर्तनी अर बां रै अरथ माथै विचार करो अर जठै तांई हुय सकै, आं सबदां रै सुद्ध रूप नैं ईज लिखती वेळा काम मांय लेवो। अैड़ा कीं सबद इण भांत

है—'सोरो' अर 'सौरो' मांय मोकळो फरक है। 'सोरो' तो 'गंधक' नैं कैवै, जिणसूं बारूद बणायो जावै, जदकै 'सौरो' रो अेक अरथ तो भेळो करणो हुवै अर अेक अरथ हुवै सरल, आसान अर आरामदायक। जियां—जीव सौरो हुयग्यो। औ काम तो घणो सौरो है।

इणी भांत 'दोरो' अर 'दौरो' सबदां मांय भी मोकळो फरक है। 'दोरो' सबद रो अेक अरथ तो हुवै घूमणो—''बो अबार ई केई गांवां रो दोरो करनै आयो है।'' अर ''उणनै दोरो पड़ग्यो।'' इण वाक्य में 'दोरो पड़ग्यो' रो अरथ हुयो कै उणनैं चक्कर आयग्यो। 'सौरो' सबद 'स्सोरो' भी लिख्यो जावै, पण भासा में 'सौरो' ईज सही मान्यो जावै।

'साम्ही', 'साम्हीं' अर 'सामी' में भी फरक है। अरथ री दीठ सूं 'साम्ही' रो अरथ हुवै सम्हाळणो—''बो उणरी जिम्मेवारी साम्ही।'' जदकै 'साम्हीं' रो अरथ हुवै—सामनै। जियां, ''उणरो घर ठाकुरजी रै मिंदर साम्हीं है।'' जदकै सामी, सांमी, स्यामी सबद 'स्वामी' सारू काम में लिया जावै।

'काल' अर 'काळ' में भी फरक है। 'काल' रो अरथ है बीत्योड़ो अर आवणवाळो दिन। जदकै 'काळ' रो अरथ है 'म्रित्यु' अर 'दुरभिख' (अकाळ), जियां—''कोरोना कांई आयो, मिनखां रो काळ ई आयग्यो'' अर ''अबकाळै काळ नीं पड़्यो, चोखो जमानो हुयो।''

'बाल' अर 'बाळ' रा अरथ देखो—'बाल' रो अरथ है—'बाळक', 'टाबर'। जियां—बाल-गोपाल राजी है नीं? अर 'बाळ' रो अरथ है—'केस', 'माळ'। 'बाळ' रो अेक अरथ बाळणो (जळाणो) भी हुवै, जियां—''कोई उणरी झूंपड़ी बाळ दीवी।''

'माल' अर 'माळ' में भी इणी भांत रो भेद है। 'माल' रो मतलब धन सूं है, जदकै 'माळ' रो अरथ 'केस' अर 'बाळ' है।

'मूंडो' अर 'मूंढो' में भी फरक है। 'मूंडो' रो अरथ ठगणो है। वाक्य देखो—''उण बापड़ै नैं क्यूं मूंडो रे?'' जदकै 'मूंढो' मुंह (मुख) नैं कैवै। वाक्य देखो—''पैली तो कालायां करै अर पछै मूंढो लुकांवतो फिरै।''

राजस्थानी में 'अर' रो प्रयोग 'और' सारू करीजै। 'नै' रो प्रयोग 'अर', अर 'नै' रो प्रयोग 'को' सारू करयो जावै। 'नै'='अनइ'—'अनै'—'नै' रूप-भेद में मानक 'नै' है, जियां—जायनै, जाय'र। आयनै, आय'र। राम'र मोहन। राम अर मोहन। आपनैं लखदाद है। इत्याद वाक्यां में 'नै', 'नैं' अर 'अर' ('र) रो प्रयोग हुयो है।

अठै अखिल भारतीय राजस्थानी साहित्य सम्मेलन रा सभापति ठा. रामसिंह तंवर री बात रो दाखलो देवणो चावूं। बै सन् 1944 में दिनाजपुर मांय हुयै सम्मेलन में कैयो कै किणी भी जाति रो जीवण नूंवो साहित्य ही है। पुराणै साहित्य सूं प्रेरणा मिलै, पण जीवण

तो नूंवै साहित्य सूं ईज है। इण रो सिरजण इत्तो जरूरी है, जित्तो पुराणै रो रख-रखाव। आपणो नूंवो साहित्य जमानै रै जोग, जुग री जरूरतां रै अनुकूल हुवणो चाईजै। आज आपां नै इसै प्रगतिसील साहित्य री जरूरत है, जको आपां नैं आगै बधण में अर ऊंचा उठण में सायता पुगावै। इणी कड़ी में जयपुर मांय 'राजस्थान भासा प्रचार सभा' कानी सूं ईस्वी सन् 1966 में 18 सूं 20 मार्च तांई 'राजस्थानी गद्य रै स्वरूप-निरधारण' सारू अेक कार्यसाला रो आयोजन करीज्यो, जिणमें रावत सारस्वत, वेद व्यास, शंभुसिंह मनोहर, कोमल कोठारी, सीताराम लालस, नरोत्तमदास स्वामी इत्याद पचासूं लोगां इण भासा री 'मानक' सबदावळी सारू केई निर्णय लिया, बां मांय सूं कीं इण भांत है—

हिंदी मांय 'मैं' री ठौड़ राजस्थानी मांय 'मं, मैं, म्हैं, म्हूं, हूं में' इत्याद रूप देखण में आवै। मानक रूप में अठै 'म्हैं' अर 'हूं' नैं ईज स्वीकार करयो जावै।

हिंदी मांय 'में' री ठौड़ राजस्थानी मांय फेरूं 'मं, में, मैं, मांय' इत्याद रूप बरत्या जावै, पण मानक रूप में अठै 'में' अर 'मांय' रूप नैं ईज स्वीकार करयो जावै।

हिंदी मांय 'तू, तुमको, आपको' सबदां री ठौड़ राजस्थानी में 'तूं, तनै, थांनै' सबद लिख्या जावै। 'थानै' हळकै दरजै रो अर 'थांनै' ऊंचै दरजै रो सबद मान्यो जावै।

हिंदी मांय 'तरह, कि, नहीं' जैड़ा सबदां री ठौड़ राजस्थानी मांय 'तरै, कै, नीं' सबदां रो प्रयोग करयो जावै। हिंदी रा सबद 'सिंह' अर 'क्या' री ठौड़ राजस्थानी में 'सिंघ' अर 'कांई' लिख्यो जावणो चाईजै।

हिंदी में 'अरे' री ठौड़ राजस्थानी में 'अरै' लिखणो चाईजै। विभक्ति री दीठ सूं 'राजा रा घोड़ा पर' अर 'किला रा माथा पर' री ठौड़ 'राजा रै घोड़ै पर' अर 'किलै रै माथै पर' लिखणो चाईजै।

हिंदी में सर्वनांव—'मैं, मैंने, मेरे से, मेरे में' री ठौड़ राजस्थानी में 'हूं, म्हैं, म्हारै सूं (म्हां सूं), म्हां में (म्हारै में) लिखणो अर 'तू, तुझे, तेरे से, तुझमें' री ठौड़ 'तूं, तनै, थारै सूं, थारै में' लिखणो चाईजै। हिंदी में 'आपका, आपमें, आपको' सबदां नैं राजस्थानी मांय आपरो (थांरो), थां में, आपनैं (थांनै) लिख्यो जावै। इणी तरै 'हम' री ठौड़ 'म्हे' अर 'आपां' सबद रो प्रयोग करयो जावै।

हिंदी में 'यह, ये, इस, इसने, इसको, उस, उसने, इनमें' री ठौड़ राजस्थानी में 'औ, अै, इण, इणनैं, उण (बीं), उणनैं, इणां में' सबद लिख्या जावै। इणी भांत 'कौन, उण' नैं 'कुण, उण' लिखणो चाईजै। 'कही, पर, या' री ठौड़ 'कैयी, पण, का' रो प्रयोग करयो जावै।

अेक निर्णय औ भी लियो गयो कै कीं सबद नीचै मुजब सही लिख्या जावै, जियां—कनै, आघो, खाथो, ऊंतावळ, चोखो, बगत, किनारो, निजर, आणंद, जचै, नदी,

सारू, आवतो, कीं, सवाल, काल, मसखरी, सूंघै, साच, सूं, बिरछ, भाजै, उमर, पकड़, मस्त, रैया, मणिया इत्याद।

अै निर्णय आपणा आगीवाण सिरजकां री सूझ रा साखी है। आपां बोलां तद बोली रो असर रैवै, पण लिखती वेळा सबद रै सही उच्चारण माथै ध्यान देवणो जरूरी है।

'परिणति' री सूटिंग रै बगत बिज्जी महीनै तांई श्रीडूंगरगढ़ में रैया। उण बगत 'इतवारी पत्रिका' में बिज्जी रै लोक-उपन्यास 'मां रौ बदळौ' रो 'प्रतिशोध' नांव सूं उल्थो छप्या करतो। उणनैं म्हैं टाइप करतो। बिज्जी 'चिह्न' रो उच्चारण 'चिन्ह' अर संबोधन वाळा ओकारांत सबदां माथै अनुस्वार रो उच्चारण करता। म्हैं इण माथै सवाल उठायो तो बिज्जी कैयो कै बोलचाल में आं सबदां रो ईज बेसी चलन है अर आं सबदां रो उच्चारण भी अैड़ो ईज है। फेर कैलास कबीर 'जाल्मन दीमसिल्स' रै हवालै सूं म्हारी बात सही ठैराई, तद बिज्जी श्याम महर्षि सूं बोल्या, ''श्यामजी, मदन री टाइप करयोड़ी प्रति में अेक भी गळती नीं है। इणरो भासा-ग्यान सरावणजोग है।'' पण उच्चारण ठीक हुवणै री कांई गारंटी है? आपां बोलां तो 'हांढ' अर लिखां 'सांढ'। बोलां 'होगरो' अर लिखां 'सोगरो'। बोलां 'हतायु' अर लिखां 'सतायु'!'' म्हैं कैयो, ''औ बोलीगत प्रभाव है, पण म्हैं तो 'सांढ' नै सांढ ईज बोलां अर सोगरो, सतायु नैं ई सोगरो, सतायु ईज बोलां अर लिखां।''

इण भांत हिंदी साहित्य रै वैग्यानिक इतिहास रा लेखक डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त 'हिंदी भाषा साहित्य विश्वकोश' रै संपादन में म्हनैं सह-संपादक बणायो (औ ग्रंथ तीन खंडां में छप्योड़ो है।), तद उच्चारण नैं लेयनै बै केई सबदां रै आधुनिक रूप नैं सही नीं मान्यो। म्हैं कैयो कै पैलां 'वर्म्मा', 'शर्म्मा', 'मानमल्ल' जैड़ा सबद लिख्या जांवता, जका अबार 'वर्मा', 'शर्मा' अर 'मानमल' लिख्या जावै। पैलां 'नयी, आयी, खायी, आये, खाये' जैड़ा सबद प्रयोग में लिया जांवता, अबै बांरी ठौड़ 'नई, आई, खाई, नए, आए, खाए' सबद सही मान्या जावै। डॉ. गुप्त कैयो कै मूळ सबद 'नया' है, इणी सूं 'नयी' अर 'नये' बण्या है। इणी तरै 'आया' सूं आयी अर आये, 'खाया' सूं खायी अर खाये बण्या है। म्हैं कैयो, ''स्वरां रो प्रयोग सुद्ध मान्यो जावै। आपरै हिसाब सूं तो 'आया—आये—आयी—आयीये' अर 'खाया—खाये—खायी—खायीये' ईज सही है, पण सही तो 'आया-आए-आई-आइए' अर 'खाया-खाए-खाई-खाइए' ईज है। आप बार-बार उच्चारण करनै देखो। व्यंजन तो बियां ई स्वरां रै मेळ सूं बणै।''

डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त बोल्या, ''स्वर री दीठ सूं तो म्हैं मूळ सबद 'हुआ' सूं बण्योड़ा 'हुए' अर 'हुई' नैं ई ठीक मानतो, पण आं दिनां मांय अैड़ै सबदां रा दोनूं रूप प्रचलन में है। आधुनिक हिंदी में उच्चारण री दीठ सूं स्वर रै उच्चारण वाळा सबद सही ठैराया गया है, इणरी जाणकारी म्हनैं है, पण म्हैं म्हारी वर्तनी नीं बदळूंला, क्यूंकै म्हारी

किताबां री भासा रो भासा-वैग्यानिक अध्ययन करयां 'हिंदी भाषा साहित्य विश्वकोश' री भासा किणी और री ईज बताईजसी।'' फेर बै मुळकता थकां होळै-सीक कैयो, ''अब आखिरी वक्त में क्या खाक मुसलमां होंगे।''

कैवण नै तो और घणी ई बातां है, पण मोटै रूप में आपां देखां कै आज री राजस्थानी में बोलचाल अर उच्चारण री दीठ सूं देसकाळ नै ध्यान में राखता थकां लोक-प्रचलित सबदां रो सही रूप ई काम में लेवणो चाईजै। म्हारै देखतां-देखतां संग्या सबदां में 'दांन' अर 'रांम' रा रूप अनुस्वार-मुगत हुयग्या अर दंत्य 'स' रो प्रयोग ई लारै रैयग्यो। अबै 'स्रीलाल' अर 'संकरलाल सरमा' री ठौड़ श्रीलाल अर शंकरलाल शर्मा ईज लिख्यो जावै।

म्हारै कनै 'रामरासौ' री तीन प्रतियां है। लिपिकाळ री दीठ सूं तीन्यां री भासा में फरक है। अेक में 'रासउ', 'आयउ', 'जायउ' जैड़ा सबद है, बीजी में 'रासौ', 'आवौ', 'जावौ' जैड़ा सबद मिलै अर गिरधरदान रतनू, दासोड़ी रै संग्रालय वाळी प्रति में 'रासो', 'आवो', 'जावो' जैड़ा सबद मिलै। (आ प्रति घणी सुपाठ्य है। इण री सरुवात ईज 'अथ रामरासो लिख्यते' सूं हुवै है।)

सीतारामजी रै समकालीन बदरीप्रसादजी रै 'राजस्थानी-हिंदी सबदकोश' मांय 'ओकारांत' राजस्थानी है अर 'राजस्थानी साहित्य रो इतिहास', 'राजस्थानी व्याकरण' अर 'राजस्थानी सबदकोस' (2014 में छप्योड़ा) ग्रंथां रा सिरजक बी.एल. माली 'अशांत' ई सगळी ठौड़ सबदां रै ओकारांत रूप नैं ई बरत्यो है। राजस्थानी भासा रै आधुनिक स्वरूप री दीठ सूं श्याम महर्षि, चेतन स्वामी, सत्यनारायण सोनी, रामस्वरूप किसान, बी.एल. माली, नीरज दइया अर रवि पुरोहित इत्याद सिरजकां रो सिरजण-संपादन सरावणजोग अर महताऊ कैयो जाय सकै।

◆◆

शंकरसिंह राजपुरोहित

पांडुलिपियां रा खजाना : राजस्थान रा पोथीखाना

(गतांक सूं आगै)

... ब्रिटिश हुकूमत री बगत भी हस्तलिखित ग्रंथां री इण धरोहर नैं अेकठ करणै अर समै रा थपेड़ां सूं बचावण वास्तै खासा आफळ करीजी ही। इण आफळ रै ओळावै केई महताऊ पांडुलिपियां विदेसां में भी जाय पूगी ही। आजादी सूं पचास बरस पैलां ई अंगरेजी हुकूमत भारत री इण अमूल्य धरोहर रै संग्रहण में रुचि राखण लागगी ही। कोलकाता री 'बंगाल अेशियाटिक सोसाइटी', पूना रो 'भंडारकर ओरियंटल इंस्टीट्यूट' अर चेन्नई री 'ओरियंटल मैन्यूस्क्रिप्ट लाइब्रेरी' आद री थरपना अर पछै इण काम नैं गति देवण सारू ब्रिटिश हुकूमत रो बराबर आग्रह रैयो।

इंग्लैंड सूं रवाना होंवती बगत सर (तत्कालीन मिस्टर) जार्ज ग्रियर्सन 13 सितंबर, 1904 नैं भारत रा वायसराय लार्ड कर्जन नैं अेक कागद लिख्यो जिणमें राजपूताना अर गुजरात रा घणकरा पोथीखानां में उपेक्षित पड़ी चारणी इत्तिवृत्तां री पांडुलिपियां नैं संगृहीत करणै री बात माथै जोर दियो। लार्ड कर्जन री सरकार बंगाल री अेशियाटिक सोसाइटी सूं इण बाबत पत्र-व्यवहार चालू करयो अर इण तरै पांडुलिपियां रै सामान्य सर्वेक्षण सारू 2,400 रुपियां री राशि ई सोसाइटी रै हवालै करदी। [8]

इणरै बाद भारत रा भाषाविद् हरप्रसाद शास्त्री जद बंगाल री अेशियाटिक सोसाइटी में इण भांत रो काम संभाळ्यो तो बै अप्रैल, 1909 में आपरी नियुक्ति रै पछै चारणी-साहित्य री पांडुलिपियां रै संरक्षण सारू राजस्थान अर गुजरात रा केई महताऊ नगरां रो दौरो करयो। पण औ काम इत्तो आसान कोनीं हो क्यूंकै उण बगत राजस्थान अर गुजरात में ई पांडुलिपियां रो महत्त्व

राजपुरोहित-रैवास, कृपाळ भैरूं मिंदर चौक, सर्वोदय बस्ती, बीकानेर 334004 मो. 7610825386

समझ'र आं रै अठै ईज संग्रै रो काम सरू होय चुक्यो हो। केई लोग आं पांडुलिपियां नैं आपरै घरां राख'र आं रो निजू संग्रै बणाय मेल्यो हो। फेरूं ई बंगाल री अेशियाटिक सोसाइटी में राजस्थानी री घणकरी महताऊ पांडुलिपियां पूगगी, जकी आज भी कोलकाता में सुरक्षित पड़ी है पण उणां रै बारै में जाणणियो-समझणियो बठै कोई कोनी।

हस्तलिखित ग्रंथागारां में उदयपुर रो साहित्य-संस्थान (राजस्थान विद्यापीठ) सिरै गिणीजै। इणरी नींव विद्या-व्यसनी पं. जनार्दनराय नागर सन् 1941 में राखी। इणरै पोखीखानै में लगैटगै 5,000 हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध है। अै ग्रंथ मठां-मिंदरां, जागीरदारां, राजपुरोहितां, चारणां अर दूजा लोगां रै निजूं संग्रै सूं संगृहीत करीज्या। आं में 15वीं सूं 20वीं सदी तांई रा हस्तलिखित ग्रंथ शामिल है। संस्कृत रै अलावा प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी अर राजस्थानी रा ग्रंथ प्रमुखता सूं इण साहित्य-संस्थान में संगृहीत है। इतिहास अर आगम-शास्त्र रा ग्रंथ ई प्रचुर मात्रा में इणरै पोथीखानै में सुरक्षित है।

आगम-शास्त्रीय ग्रंथां में सगळां सूं पुराणो नृसिंहाख्य प्रणीत, विष्णु भक्ति चंद्रोदय री मातृका है। इणरो लिपिकाल वि. सं. 1407 है। तंत्र अर भक्ति सूं संबंधित इण ग्रंथ रो प्रसिद्ध वैयाकरण भट्टोजि दीक्षित आपरै ग्रंथ 'तंत्राधिकारी निर्णय' में ई उल्लेख करयो है। देवपूजा सूं संबंधित 'वेखानस संहिता' दूजो महताऊ ग्रंथ है। वेखानस पद्धति सूं दक्षिण में तिरुपति बालाजी रै मिंदर में भगवान वैंकटेश्वर री पूजा अर्चना हुवै। देवनागरी लिपि रै इण ग्रंथ में कुल सात पत्र अर 22 पटल है। अेक उल्लेखजोग ग्रंथ नारायण कंठ रा पुत्र रामकंठ भट्ट विरचित मतंग परमेश्वर री 'मतंगवृत्ति' शीर्षक सूं संपूर्ण मातृका है। तंत्र विषयक इण अप्रकाशित ग्रंथ रो लिपिकाल वि. सं. 1853 है अर इणमें 5800 श्लोक है। जैनागमां में 'दशवैकालिक' री आठ प्रतियां भी अठै है। आं में वि. सं. 1643, 1666 अर 1759 री प्रतियां महताऊ है। अन्य जैनागमां में नंदी सूत्र, कल्पसूत्र अर वृहत्कल्पसूत्र री भी अेकाधिक प्रतियां उपलब्ध है। [9]

साहित्य-संस्थान में संगृहीत राजस्थानी ग्रंथां में चंदर बरदाई रो पृथ्वीराज रासौ, नरहरिदास बारहठ रो अवतार चरित्र, स्वरूपदास रो पाण्डव यशेंदुचंद्रिका अर कवि मंछाराम रो रघुनाथ रूपक, करणीदान कविया रो सूरजप्रकाश, जग्गा खिड़िया विरचित वचनिका राठौड़ रतनसिंहजी महेसदासोत री अर कविराजा बांकीदासजी री ग्रंथावळी प्रमुख है।

इण साहित्य-संस्थान सूं अेक त्रैमासिक 'शोध-पत्रिका' भी छपती रैयी है, जिणरो हरेक अंक संग्रहणीय है। इण शोध-पत्रिका में राजस्थानी साहित्य सूं संबंधित आलेख उल्लेखजोग है। अठै आ बात भी प्रासंगिक है कै राजस्थानी विषयक शोधकार्य सारू दूजा संदर्भ ग्रंथां सूं बेसी शोधपरक सामग्री उदयपुर री इण शोध-पत्रिका रै अलावा राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी री 'परम्परा', राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ री 'वरदा', भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर री 'वैचारिकी', हिन्दी विश्वभारती अनुसंधान परिषद, बीकानेर री 'विश्वंभरा' अर पिलानी री 'मरुभारती' में मिलसी।

आजादी रै पछै भारत रै दूजा प्रांतां री भांत राजस्थान में भी आं हस्तलिखित ग्रंथा नैं संरक्षित करण रा प्रयास सरू होयग्या हा। राजस्थान रा हस्तलिखित ग्रंथां रा भंडारां में मुनि जिनविजयजी द्वारा स्थापित राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान रो नांव सोनलिया आखरां में मांडण जोग है। जोधपुर रै इण प्रतिष्ठान री आज तो बीकानेर, कोटा, अलवर, उदयपुर, टौंक अर चित्तौड़गढ़ में भी शाखावां संचालित है, पण सगळां सूं पैलां प्राच्यविद्या रै संग्रहण सारू सन् 1950 में मुनि जिनविजयजी री प्रेरणा सूं राजस्थान सरकार 'संस्कृत मंडल' री स्थापना करी। इणरै पछै मुनिश्री री देखरेख में ईज सन् 1954 मांय जयपुर में 'राजस्थान पुरातन मंदिर' री थापना हुई अर संस्कृत मंडल ई उणमें विलायग्यो। दो बरस पछै ईज राज्य सरकार इणनैं स्वतंत्र अर स्थाई विभाग रै रूप में मान्यता देय'र इणरो नांव राजस्थान पुरातन मंदिर सूं बदळ'र 'राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर' राख दियो।

14 दिसम्बर, 1958 नैं जद मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया इणरै जोधपुर में नवनिर्मित भवन रो उद्घाटण करयो तो ओ राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान रै रूप में आपरी अलायदी पिछाण बणायली। इणरै साथै इण रो मुख्यालय भी जोधपुर नैं बणाय दियो गयो। अठै आज तांई संगृहीत हस्तलिखित ग्रंथां री संख्या अेक लाख सूं ऊपर है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान रो मुख्यालय जोधपुर रै राजेन्द्र मार्ग माथै स्थित है। मुख्यालय रै संग्रह में 40988 हस्तलिखित ग्रंथ, 981 प्रतिलिपियां अर 273 फोटो प्रतियां संगृहीत है। अै फोटो प्रतियां जैसलमेर में स्थित 'जैन ज्ञान भंडार' रै त्हैत 258 ग्रंथां में उपलब्ध 336 महताऊ रचनावां री 7,862 प्लेट्स है।[10]

प्रतिष्ठान री शाखावां में जोधपुर रै पछै बीकानेर शाखा में सगळां सूं बेसी हस्तलिखित ग्रंथ संगृहीत है। 1961-62 में स्थापित इण शाखा में 19,839 हस्तलिखित ग्रंथ सुरक्षित है। लगैटगै अै सगळा ग्रंथ मुनि जिनविजयजी री प्रेरणा सूं प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान नैं प्राप्त हुया। आं में मोतीचंद खजांची संग्रह, यति जयचंदजी, यति हिम्मतविजयजी संग्रह, आनंदविजयजी संग्रह अर श्रीपूज्यजी जिनचारित्र्यजी रो संग्रह सरावण जोग है। कल्पसूत्र, उत्तराध्ययन रै अलावा जैनविद्या री महताऊ पांडुलिपियां इण संग्रै में उपलब्ध है।

प्रतिष्ठान री जयपुर शाखा में 11,892 ग्रंथ, अलवर शाखा में 6689, कोटा शाखा में 8553, चित्तौड़गढ़ में 5426, उदयपुर शाखा में कुल 6873 ग्रंथ संगृहीत है। अठै आ बात उल्लेख जोग है कै मुनिश्री जिनविजयजी री प्रेरणा सूं फगत जैन संप्रदाय रा लोग ई नीं रामस्नेही, दादू अर कबीरपंथी लोग ई आपरै निजू संग्रै रा हस्तलिखित ग्रंथ इण प्रतिष्ठान नैं सादर भेंट कर दिया हा। प्रतिष्ठान सूं आं हस्तलिखित ग्रंथां रै सूचीकरण रो काम अबार भी जारी है। अबार लग 27 भाग संस्कृत ग्रंथां रा अर 22 भाग सामान्य ग्रंथां रा प्रकाशित होय चुक्या है।

प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान री 'राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला' रै त्हैत आ हस्तलिखित ग्रंथां मांय सूं केई महताऊ ग्रंथां रै प्रकाशन रो काम भी हुयो है। आं छप्योड़ा ग्रंथां री संख्या

211 है। इण योजना रै त्हैत जका ग्रंथ प्रकाशित हुया है, बै धरोहर रै रूप में है। आं ग्रंथां में मुंहणोत नैणसी री ख्यात (च्यार भाग), मारवाड़ रा परगनां री विगत (तीन भाग), राठौड़ां री ख्यात, बांकीदास री ख्यात, प्रतापरासौ, बिन्हैरासौ, रतनरासौ, हमीररासौ, क्यामखांरासौ, सोढायण, राजस्थानी-हिंदी संक्षिप्त शब्दकोश (दो भाग), गोराबादळ पद्मिनी चउपई, कान्हड़दे प्रबंध, वीरवांण, सूरजप्रकाश, भक्तमाळ, रुक्मिणी हरण, अचलदास खीची री वचनिका,आद राजस्थानी री अमूल्य निधि है। इणरै अलावा संस्कृत अर प्राकृत रा केई महताऊ ग्रंथ प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान सूं छप चुक्या है।

बीकानेर रो अभय जैन ग्रंथालय भी हस्तलिखित पांडुलिपियां रो मोटो भंडार है। स्व. अगरचंदजी नाहटा आपरै बडै भाई अभयराजजी नाहटा री स्मृति में ओ ग्रंथालय स्थापित कर्यो। वि. सं. 1955 में जलम्या अभयराजजी नाहटा रो 22 बरसां री युवावस्था में ईज सं. 1977 में स्वर्गवास हुयग्यो हो। उणां री स्मृति में स्थापित इण ग्रंथालय में लगैटगै 60,000 हस्तलिखित प्रतियां संगृहीत है। आखै राजस्थान में इण ग्रंथालय नैं सगळां सूं लूंठो ग्रंथ भंडार हुवण रो गौरव प्राप्त है। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर अर उणरी किणी शाखा कनै भी इतरी संख्या में हस्तलिखित ग्रंथ कोनी। इण ग्रंथालय में वेद, पुराण, उपनिषद, काव्य, नाटक, छंद, ज्योतिष, वैद्यक, तंत्र-मंत्र आद सगळै विषयां रा ग्रंथ उपलब्ध है। राजस्थान रै अलावा देस रै दूजां राज्यां री महताऊ पांडुलिपियां री फोटो प्रतियां भी इणमें संगृहीत है, जकी संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, राजस्थानी, गुजराती रै अलावा बीजी प्रांतीय भासावां में लिखीज्योड़ी है। हस्तलिखित ग्रंथां री उपर्युक्त संख्या रो जिक्र अगरचंदजी नाहटा आपरै अेक आलेख में करयो है।

हस्तलिखित ग्रंथां रै अलावा इण ग्रंथालय में छप्योड़ी पोथ्यां भी उपलब्ध है, जिणां री संख्या लगटगै 50,000 है। पांडुलिपियां अर छप्योड़ी पोथ्यां अमूमन हरेक विषय री मिलै। इणरै अलावा अगरचंदजी रै बगत में अठै बडी संख्या में पत्रिकावां पण आंवती अर अै सगळी पत्रिकावां व्यवस्थित रूप सूं फाईलबंद इण ग्रंथालय में विद्यमान है। अेक उल्लेख जोग बात आ कै दूजा विद्वानां रा जितरा भी पत्र नाहटाजी नैं मिल्या, उणां नैं भी बै सांभ'र राख्या जका आज ई बोरां में भरयोड़ा पड़्या है।[11]

हस्तलिखित ग्रंथां रै संग्रहण रै इण काम में श्री भंवरलालजी नाहटा भी महताऊ भूमिका निभाई। बै रिश्तै में तो श्री अगरचंदजी रा भतीज हा पण प्राचीन पांडुलिपियां पढण अर उणरो अरथाव करण में बै काकै सूं ई अेक पांवडो आगै हा। हस्तलिखित ग्रंथां रै संग्रहण रै सागै बांरै सूचीकरण रै काम में उणां रो अर श्री दाऊदयाल आचार्य रो विशिष्ट योगदान रैयो। पण सामान्य रजिस्टरां में ओ सूचीकरण अेल्फाबेट अर विषयवार नीं हुवण सूं शोधार्थी असुविधा अनुभवै। इण ग्रंथालय में किणी ग्रंथ रो अवलोकन भी अबार कठिन काम है।

हस्तलिखित ग्रंथ भंडारां में राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी रो नांव उल्लेख जोग है। चौपासनी शिक्षा समिति रै हेठळ इणरी स्थापना 22 अगस्त, 1955 में हुयी। सरुआत सूं ही डॉ. नारायणसिंहजी भाटी री आगीवाणी में संचालित इण शोध-संस्थान प्राचीन राजस्थानी साहित्य नैं प्रकाश में लावण में अंतरराष्ट्रीय स्तर माथै आपरी अलायदी पिछाण बणायी है। पद्मश्री सीताराम लाळस द्वारा त्यार राजस्थांनी सबदकोस रो नौ खंडां में बिड़दजोग प्रकाशन रो काम इणी 'ज संस्थान पार घाल्यो। इणरै अलावा राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान सूं प्रकाशित मुंहता नैणसी री ख्यात (चार भाग) अर मारवाड़ रा परगनां री विगत (तीन भाग) भी डॉ. नारायणसिंहजी भाटी रै संपादन-कौशल रो पुख्ता प्रमाण है। शोधकार्य रै पेटै इण शोध-संस्थान में श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत, डॉ. हुकमसिंहजी भाटी अर विक्रमसिंह गूंदोज री सेवावां भी सरावण जोग रैयी है।

राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी सूं प्रकाशित हुवण वाळी त्रैमासिक शोध-पत्रिका 'परम्परा' रो हरेक अंक राजस्थानी साहित्य रा शोधार्थियां सारू घणो उपयोगी अर संग्रैजोग है। परम्परा रै सौवैं अंक में इणरै हरेक अंक री विगत भी प्रकाशित हुयी है। इणरै अलावा इणरै पोथीखानै में उपलब्ध हस्तलिखित ग्रंथां रा नौ भाग भी छप चुक्या है।

संस्थान रै पोथीखानै में लगैटगै 17,000 हस्तलिखित ग्रंथा रो वृहत् संग्रै है जिणमें छोटी-बडी अेक लाख कृतियां है। ओ संग्रै पुराणा ठिकाणां, मिंदरां, मठां, उपासरां, विद्वानां, चारणां, भाटां अर कबाड़ियां आद सूं प्राप्त हुयो। पोथीखानै में संगृहीत घणकरा ग्रंथ 15वीं सूं 19वीं सदी तक रा लिपिकरण कर्योड़ा है। इणमें लगैटगै 5500 ग्रंथ संस्कृत अर बाकी रा प्राकृत, ब्रज, हिंदी अर राजस्थानी भासा में रच्योड़ा है। राजस्थानी री कृतियां इण संग्रै में घणी है। जैन विषयक सामग्री रो बाहुल्य है। जैनागम रा मूळग्रंथां रै अलावा टीकावां, बालावबोध, टब्बा, ढाळां, सिज्झावां, रास, स्तवन, स्तोत्र, चोढाळिया, सिलोका, वार्तिक आद कृतियां में जैन विषयक पुष्कल सामग्री संकलित है।[12]

इण शोध-संस्थान में जठै राजस्थानी साहित्य शास्त्र रा केई ग्रंथ संगृहीत है, बठै ई राग-रागनियां सूं संबंधित भी मोकळी कृतियां मिलै। कल्पसूत्र, ढोला मारू री चौपाई जैड़ा केई मनमोवणा चित्रित ग्रंथ भी इण शोध-संस्थान रै संग्रै में चार चांद लगावै। चित्रात्मक पांडुलिपियां रै टाळ राजपूत शैली रा 300 चित्रां रो दुर्लभ संग्रै भी है। संत-साहित्य अर चारण-साहित्य रै ग्रंथां री अठै भरमार है। प्राचीन राजस्थानी गद्य-पद्य साहित्य री लगैटगै सगळी विधावां में अठै ग्रंथाकार अर फुटकर रचनावां सुरक्षित है। साथै ई ओ शोध-संस्थान राजस्थानी लोक-साहित्य सूं संबंधित दूहा-गीत, वातां-कथावां अर अैतिहासिक ख्यातां रो अमोलक खजानो है। राजा-महाराजावां री ख्यातां, पीढियां अर राजघराणै रा रीति-रिवाजां रै सागै इण शोध-संस्थान में जैनां री वंशावली भी है, जिणमें जैनां री शाखावां, उपशाखावां रो सांवठो वरणाव मिलै। आ वंशावली संस्थान रै ग्रंथांक 12767 सूं 12770 तक रा पूठा में सुरक्षित है। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सूं मान्यता प्राप्त इण शोध-केंद्र में उपलब्ध सामग्री रो उपयोग कर'र देस-विदेस रा केई शोधार्थी पी-एच.डी. री उपाधि प्राप्त कर चुक्या है।

जोधपुर री भांत उदयपुर रै प्रताप शोध प्रतिष्ठान में भी हस्तलिखित ग्रंथां रो संग्रह है पण अठै संगृहीत ग्रंथां री संख्यां सीमित है। इणरी स्थापना 1970-71 में भूपाल नोबल्स कॉलेज रै अंतर्गत करीजी। प्रतिष्ठान कांनी सूं 'मज्झमिका' नांव सूं अेक शोध-पत्रिका रो प्रकाशन भी होंवतो रैयो है। प्रतिष्ठान में संकलित डेढ सौ-दो सौ हस्तलिखित ग्रंथां में सगतरासौ महताऊ मानीजै, जिणरो प्रकाशन भी प्रतिष्ठान कर चुक्यो है। इणरै अलावा रामायण री प्रतियां इण प्रतिष्ठान रो महताऊ संग्रह मानीजै।

ज्यूं कै पैली उल्लेख करयो जाय चुक्यो है कै हस्तलिखित ग्रंथां रै संग्रहण अर सूचीकरण में जैन समाज रो व्यापक योगदान रैयो है। देस में जठै कठैई महताऊ पांडुलिपियां लिखीजी वांरी प्रतिलिपि रै संग्रहण रो काम भी जैनाचार्य करता रैया। उणां आपरै ग्रंथ भंडारां में ई विद्वान लिपिकर्ता राख राख्या हा जका आखै दिन ग्रंथां री लिपियां उतारण रो काम करता। जैन भट्टारक ओ काम करावण में आगीवाण हा। पांडुलिपियां रै आसै-पासै बहुरंगी बेल-बूटां तो अै लिपिकरता मांडता ही हा पण मोकळी चित्रात्मक पांडुलिपियां भी आं ग्रंथ भंडारां में सुरक्षित है। प्रेमाख्यान री केई चित्रात्मक पांडुलिपियां तो आज रै कॉमिक्स-साहित्य सूं भी इधकी अर मनमोवणी है।

राजस्थान में जैन धरम रा आं हस्तलिखित ग्रंथागारां मांय सूं घणकरा जैन मिंदरां अर उपासरां में स्थापित करीज्या। इणरै अलावा जैन समाज द्वारा स्थापित शिक्षा मिंदरां अर विश्वविद्यालयां में भी आं हस्तलिखित ग्रंथां रा अलग सूं पोथीखाना स्थापित करीज्या।

जोधपुर क्षेत्र में 1981 में स्थापित 'जिन दर्शन प्रतिष्ठान' री स्थापना अैड़ा ईज प्रयासा री परिणति ही। रावटी में जैन श्रावक जौहरीमल पारीख पैलां इण प्रतिष्ठान री 'सम्यक् ज्ञान भंडार' रै नांव सूं परिकल्पना करी। इण भंडार में उणां आसै-पासै रा केई गांवां सूं हस्तलिखित ग्रंथां रै निजू संग्रहां नैं संगृहीत करया।

जिन दर्शन प्रतिष्ठान रै सम्यक् ज्ञान भंडार 'सेवा मंदिर', रावटी में अबार लग पांच ज्ञान भंडारां री लगैटगै 2000 हस्तलिखित गंथ संगृहीत होय चुक्या है। [13]

तेरापंथ धर्मसंघ रा नौवां आचार्य गुरुदेवश्री तुलसी री प्रेरणा सूं जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, लाडनूं रै वर्द्धमान ग्रंथागार में हस्तलिखित पांडुलिपियां रो महताऊ संग्रै उपलब्ध है।

सन् 1991 सूं जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय रै केंद्रीय पुस्तकालय रै रूप में नूंवै भवन में संचालित वर्द्धमान ग्रंथागार में 50,000 प्रकाशित ग्रंथ उपलब्ध है जदकै हस्तलिखित ग्रंथां री संख्या 11,000 रै लगैटगै है।

हस्तलिखित ग्रंथां रै दुर्लभ संग्रै में सोनलिया आखरां सूं मंड्योड़ो हस्तलिखित 'कल्पसूत्र' वर्द्धमान ग्रंथागार में सुरक्षित है। इणरै अलावा भारत रै दुर्लभ ग्रंथां मांय सूं अेक

'बारा बुधेर' उपलब्ध है। इण पोथी रो संबंध गौतम बुद्ध रै जीवनकाळ में बौद्ध धर्म रै इंडोनेशिया देस में जावा शहर रा मिंदरा सूं है।

इणरै अलावा आगम रा मोकळा शास्त्र इण ग्रंथागार रै हस्तलिखित संग्रह में उपलब्ध है। जैनागम सूं संबंधित केई ग्रंथां रै संपादन अर प्रकाशन रो काम भी आचार्यश्री तुलसी अर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी रै वाचना प्रामुख्य में होय चुक्यो है। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी रै संपादकत्व में भगवती-जोड़ रो सात खंडां में प्रकाशन भी संस्थान सारू बडी उपलब्धि है।

हस्तलिखित ग्रंथ संग्रह में राजस्थानी री केई महताऊ पांडुलिपियां वर्द्धमान ग्रंथागार में सुरक्षित है। आं में पृथ्वीराज रासौ री दो प्रतियां है। ढोला-मारू रा दूहा, रुकमणी मंगळ, किरतार बावनी, नवरास, शील रास, श्रीपाळ रास, नेमिनाथ रास, जंबूवती रास, स्थूलभद्र रास, अद्भुत विलास, नल दमयंती, खापरियो चोर, लाला मेवाड़ी री बात, मंगळ कळश चौपइ, द्रौपदी री चौपइ, गोरा बादळ चौपइ आद री प्रतियां भी इण ग्रंथागार में संगृहीत है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर रा ब्रजेशकुमार सिंह जयपुर अर नागौर क्षेत्र में जैनियां रै केई हस्तलिखित ग्रंथ भंडारां रो उल्लेख आपरै अेक आलेख में करयो है। आं में जयपुर में बडा तेरहपंथियां रै जैन मिंदर, बाबा दुलीचंद बडो मिंदर, पं. लूणकरणजी पांड्या रो ग्रंथ भंडार, पाटौदी जैन मिंदर, चौधरियां रो जैन मिंदर, बैराठियां रो जैन मिंदर भंडार, संघीजी जैन मिंदर ग्रंथ भंडार, छोटा दीवानजी रो जैन मिंदर ग्रंथ भंडार, गोधां रो दिगंबर जैन मिंदर, यशोदानंदजी रो जैन मिंदर, विजयराम पांड्या रो जैन मिंदर, पार्श्वनाथ जैन मिंदर, वृद्धिचंदजी जैन मिंदर, खरतरगच्छीय ज्ञान भंडार जैन उपाश्रय, लश्कर जैन मिंदर, मरुजी जैन मिंदर, थोलिया जैन मिंदर आद में हस्तलिखित ग्रंथागार रो उल्लेख करयो है। जयपुर रै पाखती जोबनेर रो जैन मिंदर अर आमेर में नेमिनाथ दिंगबर जैन मिंदर रै अलावा नागौर रै बीसपंथी दिगंबर जैन मिंदर रै ग्रंथ भंडार में उपलब्ध हस्तलिखित ग्रंथां रो विस्तार सूं उल्लेख उणां आपरै आलेख में करयो है।

इणी भांत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर सूं प्रकाशित ग्रंथ 'जैन संस्कृति और राजस्थान' में प्रकाशित आलेख 'हस्तलिखित जैन ग्रंथ भंडार' में श्री अगरचंदजी नाहटा श्वेतांबर ज्ञान भंडारां रै बारै में विस्तार सूं जाणकारी दीवी है। आं में उणां बीकानेर रै गोविंद पुस्तकालय, सेठिया जैन लाइब्रेरी, क्षमाकल्याणजी ज्ञान भंडार, हेमचंद्रसूरि पुस्तकालय, कुशलचंद्रगणि पुस्तकालय, पन्नीबाई रै उपासरै रो ज्ञान भंडार, छतिबाई रै उपासरै रो ज्ञान भंडार, कोचरां रै उपासरै रै ज्ञान भंडार रो उल्लेख करयो है। नाहटाजी सरदारशहर री तेरापंथी सभा अर श्रीचंद गणेशदास गधैया री हवेली अर चूरू री सुराणा लाइब्रेरी में भी हस्तलिखित ग्रंथां रै संग्रै री जाणकारी दीवी है।

राजस्थान रा जैन ग्रंथ भंडारां माथै शोध-प्रबंध लिखणिया डॉ. कस्तूरचंदजी कासलीवाल 'जैन ग्रंथ भंडार्स' ग्रंथ में राजस्थान रै लगैटगै सगळा जैन ग्रंथ भंडारां री

विस्तृत अर शोधपरक जाणकारी दीनी है। इण ग्रंथ में जैनाचार्य जिनभद्रसूरि द्वारा स्थापित जैसलमेर रै वृहत् ज्ञान भंडार रै बारै में तो घणै विस्तार सूं जाणकारी दिरीजी ही है, साथै ई श्वेतांबर, दिगंबर अर स्थानकवासी संप्रदाय रै ज्ञान भंडारां री भी सूक्ष्म सूचनावां संकलित है।

कैवण रो अरथ ओ कै आखै राजस्थान रा घणकरा जैन मिंदरां अर उपासरां में छोटा-मोटा ज्ञान भंडार स्थापित है। इणरै अलावा भी राजस्थान रा केई ठिकाणां रा गांवां में हस्तलिखित ग्रंथ मिल जावै। अै हस्तलिखित ग्रंथ जागीरदारां, चारणां अर दूजी जातियां रै निजू संग्रै में भी है। जैन संप्रदाय रा प्रबुद्ध श्रावकां रै साथै-साथै केई लोग तो आपरा निजू संग्रह मुनिश्री जिनविजयजी री प्रेरणा सूं राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान नैं सादर भेंट कर दिया पण केई निजू संग्रै अजै भी धोरां री धरोहर बण्योड़ा है।

आजादी रै बाद जठै हस्तलिखित ग्रंथां नैं संरक्षित करण सारू राजस्थान सरकार राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान री स्थापना करी बठै ई राजस्थान रै रजवाड़ा रा अभिलेखां नैं सुरक्षित राखण सारू सन् 1955 में राजस्थान राज्य अभिलेखागार री स्थापना करी। इण अभिलेखागार रै प्राविधिक खंड में राजस्थान रा 21 रजवाड़ां रा अभिलेख सुरक्षित है। इणसूं पैलां आं रियासतां रा आपरा निजू सचिवालय अर अभिलेखागार हा।

अस्तु, आं पोथीखानां, ज्ञान-भंडारां, अभिलेखागारां अर निजू संग्रै में सुरक्षित हस्तलिखित ग्रंथां, अभिलेखां अर दस्तावेजां नैं उजास में लावण री जरूरत है। आज रै कंप्यूटर-जुग में बडेरां रै ज्ञान रो औ अमोलक अर अखूट खजानो आलमारी-बंद अथवा नमूनां रै रूप में आं पांडुलिपियां री प्रतियां प्रदर्शनी री विषय-वस्तु बण'र रैयगी है। सरकारी स्तर माथै 'राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन' योजना अर केई गैर सरकारी संस्थावां द्वारा ज्ञान-भंडारां में सुरक्षित आं ग्रंथां रै सूचीकरण रै साथै महताऊ ग्रंथां री माइक्रोफिल्म बणावण रा जतन इण दिशा में सारथक प्रयास कैया जाय सकै, पण फेरूं भी आंरै संपादन अर प्रकाशन रो काम गति पकड़्यां ही हस्तलिखित ग्रंथां री इण लाखीणी हेमाणी री सांवठी ओळख अर अंवेर संभव है।

(संपूरण)

◆◆

संदर्भ-सूची :

8. राजस्थान में राजस्थानी साहित्य की खोज, डॉ. हरप्रसाद शास्त्री, प्रस्तावना।
9. राजस्थान विद्यापीठ साहित्य संस्थान, डॉ. देवीलाल परमार, परंपरा (अंक 71-72) पृष्ठ 88
10. प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान का ग्रंथागार; एक सिंहावलोकन, डॉ. डी. बी. क्षीरसागर एवं ब्रजेश कुमार सिंह, वही, पृष्ठ 28
11. अभय जैन ग्रंथालय बीकानेर, श्रीलाल नथमल जोशी, वही, पृष्ठ 122
12. राजस्थानी शोध-संस्थान चौपासनी का ग्रंथागार, विक्रमसिंह गूंदोज, वही, पृष्ठ 56
13. सम्यक् ज्ञान भंडार रावटी, सुशील कुमार मूथा, वही, पृष्ठ 68

सी.अेल. सांखला

टाबरां में जीव-दया जगावती—'खोल पंखेरू पांख'

हाड़ौती अंचळ में राजस्थानी साहित्य सिरजणा नैं सिमरध करबाहाळा साहित्यकारां में देवकी दर्पण को नांव अपणी लोंठी पछाण राखै छै। राजस्थानी लोककथा संग्रै 'क्है चकवा सुण चकवी', जातरा वृत्तांत 'कांकरी घूंदता पग' जसी मोटी पोथ्यां मांडबाहाळा देवकी दर्पण नैं काव्य सिरजणा भी घणी करी छै। 'अमरत को धोरो', 'मेघमाळ' कै पाछै राजस्थानी बाल काव्य की या पोथी 'खोल पंखेरू पांख' हाल ई में साहित्यगार जयपुर सूं छप'र आई छै।

राजस्थानी बाल-साहित्य सिरजण में रचनाकारां की रुचि जागबा सूं अब बाल-साहित्य भी बरोबर लिख्यो जारयो छै। बाळक को मन ज्यां विसयां में रमै छै, वां में पंखेरू सब सूं पैल्यां आवै छै। या पोथी ईं लेखै भी खा होगी, कै ईं की संदी की संदी रचनावां पंखेरू पै ईज रची छै। गुरगल, कोयल, चिड़ी, कबूतर, मोर, मिट्ठू सूं लेय'र घणा ई दुरलभ पंछी नीलगिरी, हरियल, सुरग, लाल मुनियां, लायर वर्ड, पतेना, जकाना, मोनाल पंछी जस्या इक्कावन तरै का पंखेरूवां पै कवि देवकी दरपण बाल-काव्य रच्यो छै। गजल विधा में यो पैलो राजस्थानी बाल काव्य छै। कोयल पै मांडी या रचना देखो—

कू कू करती बैठ डाळ पै, सूता रोज जगाती कोयल
मीठी नींदा में रस घोळै, नत परभाती गाती कोयल

'चिड़ी' को दरद अर मैनत, घुसाळो बणाबो अर फेर बच्चयान तांई ममता छावूं देबो बालमन में चोखा संस्कार भर दे छै—

बीण तुणकल्यां चूंचा भर, डाक घुसाळो करै चड़ी
पीड़ झेल अंडा देती, ममता छाया तरै चड़ी

'शब्दवन', टाकरवाड़ा, जिला-कोटा (राज.) मो. 9928872967

प्रीत की पछाण सारस को जोड़ो करावै छै। क्रौंच पंछी की विरह वेदना सूं ई पैलीपैल काव्य सिरजणा होई छै, या बात सास्तर बखाणै छै। कवि देवकी दर्पण सारस पंछी पै रचना मांडै छै तो कोरो रंग-रूप ई न्हं बतावै, ऊं को सभाव, रैणगत, मरजादा अर सांस्कृति महत्त्व भी बतावै छै—

सांस्कृतिक महताऊ पंछी, प्रीत पछाण बतातो जोड़ो
आसमान में चूंच उठायां, गीत प्रेम का गातो जोड़ो

मिट्ठू, मैना, मोर, पपैयो, चकवा, चकवी, खंजन, हंस, कुरजां, चकोर जस्या पंखेरूवां पै घणी ई सोवणी-मोवणी बालकाव्य सिरजणा होई छै। और भी अस्या-अस्या पंछी ज्यादा नांव भी न्ह सुण्या, वां पै भी कवि की कलमकोरणी नैं स्यानदार रचनावां रची छै। दूधराज पंछी पै या रचना पै मांडी या रचना पढज्यो—

ज्वीट ज्वीट चें चें बोलै छै, धुन काणा कांई गावै मन
बैसाखां सूं आसाढ तांई, संख्या घणी बधावै मन

आपणा राजस्थान का राज्य पंछी गोडावण नै कवि देवकी दर्पण भूल भी कस्यां सकै छै? गोडावण पै मांडी या रचना बाळकां लेखै ग्यानवर्धक छै—

बारां जिला सोरसण बसतो, अब अे दन धोतो गोडावण
शोकलिया उद्यान मरू में, बस आसा जोतो गोडावण

राम चिरैया, तुई, नीलगिरी, गरुड, घग्गू, बगलो, कागलो, ठीठोड़ी, बया, डैखड़, खाती, चड़ो, काळचड़ी, हुक्को, बाज, पपय्यो, चील, बतख जस्या केई पंछयान् पै कवि रचनावां मांडी छै।

अै रचनावां बाळकां का मन में रुचि तो जगावै ई छै, पंखेरुवां कै प्रति प्रेम भी उपजावै छै। प्रकृति सूं हेत बधावै छै। शिक्षाप्रद उतरी छै कै जरूरी जाणकार्यां तो दै ई छै, सांस्कृतिक अर अैतिहासिक ग्यान में भी बधोतरी करै छै।

राजस्थानी साहित्य का पारखी अर सामर्थ्यवान साहित्यकार डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' ईं पोथी पै अपणी दीठ यूं दे छै—"रचनाकार आज री बाळ-गोपाळ पीढी नै पंखेरुवां री पुरसल पिछाण करावण पेटै ओ अनूठो काम कियो है।" राजस्थानी भासा का मानीता साहित्यकार पवन पहाड़िया डेह अपणी टीप में मांडै छै, "आं गजलां मांय देवकी दर्पण जी सगळा पंखेरुवां का जीवण चितराम खांचता थकां टाबरां नै मीठी-मीठी गजलां पुरसण मांड जको पैली करी छै बा सगळै साहित्त जगत मांय घणी सराईजसी अर बाल-साहित्य रै खेहर मांय ई अेक नूंवो मुकाम थापित करसी।"

◆◆

पोथी : खोल पंखेरू पांख/ कवि : देवकी दर्पण / विधा : बाल साहित्य
प्रकाशक : साहित्यागार, जयपुर / पाना 120 / मोल : 225 / संस्करण : 2022